RADIANT ACADEMY
(AFFILIATED TO CBSE)
B-180, sector-55, noida Ph: 120-4314312/ 6514636
Mob. : 9350251631/ 9674710772 E-mail: radiantacademynoida@yahoo.com
RADIANT ACADEMY
(J.H.S.) (AFFILIATED TO CBSE)
Sorkha, Sector- 115, noida on Fng Ph: 120- 6495106,
Mob. : 9873314814/ 9674710772 E-mail: radiantacademysorkha@yahoo.com
Let your child Explore the world with us in a Secure Environment!
We are a Co-Educational Medium Senior Secondary School imparting quality education since the last 20 years.
FROM ADMISSION OPEN NURSERY TO CLASS XI Transport Facility Available
FACILITIES AVAILABLE AT SCHOOL : ●Highly Qualified And Trained Faculty well Quipped Labs ●CCTV Controlled Environment ●Activity Based Learning ● Well Equipped Library ●GPS Enable Buses

आज की खबर आज ही
जनाकांक्षाओं का सजग प्रहरी
# चेतना मंच

पेज 7 मैं खुद को ग्लोबल..

वर्ष : 27 | अंक : 181 | website:www.chetnamanch.com | नोएडा, शनिवार, 21 जून, 2025 | Chetna Manch | Chetna Manch | मूल्य 2.00 रु. | पेज: 8

# योगमय हुआ पूरा देश, दिखा गजब का जोश!

**आज यानी 21 जून को 11वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस देश और दुनिया में मनाया जा रहा है। इस साल खास आयोजन 'योग संगम' के तहत सुबह 6:30 से 7:45 बजे तक देशभर के एक लाख से ज्यादा जगहों पर कॉमन योग प्रोटोकॉल के मुताबिक सामूहिक रूप से योग किया जा रहा है। वहीं, दुनिया भर में कुल 191 देशों में योग दिवस मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस बार आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में राष्ट्रीय योग कार्यक्रम का नेतृत्व किया। लेह से विशाखापटनम तक देश योगमय हो गया और इस दौरान देशवासियों में गजब का जोश देखने को मिला।**

## दुनिया के लिए योग एक पॉज बटन : प्रधानमंत्री

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** अंतरराष्ट्रीय योग दिवस- 2025 के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में योग किया। वे यहां पर योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किए गए कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहे हैं। पीएम मोदी ने कार्यक्रम में बोलते हुए पिछले एक दशक में योग की वैश्विक यात्रा का जिक्र किया। उन्होंने उस ऐतिहासिक लम्हे को याद किया, जब भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता देने का प्रस्ताव रखा था. बहुत कम वक्त में 175 देश भारत के साथ खड़े हो गए। (शेष पृष्ठ-4 पर)

## योग भारत की ऋषि परंपरा की देन : मुख्यमंत्री

**लखनऊ (एजेंसी)।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2025 के अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को कहा कि योग से न सिर्फ शरीर स्वस्थ होता है, बल्कि मन भी स्वस्थ रहता है। दरअसल 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पूरे देश के साथ-साथ लखनऊ के राजभवन सहित पूरे राज्य में मनाया गया। इस दौरान जहां बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

वहीं राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने भी राजभवन में कार्यक्रम में भाग लिया। जबकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर में समारोह का नेतृत्व किया। 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' पर विशेष योग सत्र पूरे राज्य में निर्धारित स्थानों पर सुबह छह बजे शुरू हुए।

गोरखपुर में महंत दिग्विजय नाथ स्मृति भवन सभागार में सामूहिक योग अभ्यास

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, 'योग भारत की ऋषि परंपरा से हम सभी के लिए एक ऐसा मंत्र है, जो हमें स्वस्थ शरीर के साथ-साथ स्वस्थ मन भी प्रदान करता है।' 'भारतीय ज्ञान ने प्राचीन काल से ही हम सभी को योग के बारे में विस्तार से अवगत कराया है।'

मुख्यमंत्री ने कहा कि धर्म, कर्म, मोक्ष, कोई भी कार्य स्वस्थ शरीर से ही संभव है। धर्म का कोई भी कार्य, चाहे वह आध्यात्मिक उत्थान हो, सांसारिक उन्नति हो या हमारी किसी सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाना हो, स्वस्थ शरीर के बिना संभव नहीं है। इच्छाएं तभी पूरी होती हैं, जब आप स्वस्थ हों और आपका स्वास्थ्य अच्छा हो। स्वस्थ शरीर से ही व्यक्ति आध्यात्मिक उत्थान के सोपानों को प्राप्त कर सकता है। योग भारत की ऋषि परंपरा की देन है। इसे लोक कल्याण का माध्यम बनाकर भारत ने विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। यह एक लंबी परंपरा है, जिसके विभिन्न आयाम देखने को मिलते हैं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर श्रीनगर के डल झील के किनारे स्थित एसकेआईसीसी में योग सत्र का आयोजन किया गया। इस आयोजन में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने शांत वातावरण और खूबसूरत प्राकृतिक नजारों के बीच योगाभ्यास किया।

## योग से शरीर और मन स्वस्थ्य रहता है : केशव प्रसाद मौर्य

**गाजियाबाद (ब्यूरो)।** उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने गाजियाबाद मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस में बतौर मुख्य अतिथि प्रतिभाग किया। केशव प्रसाद मौर्य ने गाजियाबाद में योग दिवस कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। और 11वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की बधाई दी।

अपने सम्बोधन में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि योग, भारतीय मनीषा का विश्व

मानवता को प्रदान किया गया अमूल्य उपहार है, जिससे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूरी दुनिया को परिचित कराया है। योग से शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य योग के स्वाभाविक परिणाम हैं। योग सुख, शांति, समन्वय,स्वास्थ्य व कल्याण का सफल माध्यम है। सभी लोग योग को अपनी नियमित दिनचर्या का हिस्सा बनाएं।

उन्होंने कहा कि कहा आइए, 'स्वस्थ भारत, (शेष पृष्ठ-4 पर)

## शटडाउन करने में लापरवाही, लाइनमैन को लगा करंट

**ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)।** शटडाउन लेकर बिजली के खंभे पर चढ़े लाइनमैन को करंट लगने के मामले में ड्यूटी पर तैनात सब स्टेशन ऑपरेटर (एसएसओ)के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है। थाना जेवर में यह मुकदमा विद्युत विभाग के जेई ने दर्ज कराया है।

विद्युत विभाग के जेई वीरेंद्र सिंह ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि संविदा पर कार्यरत लाइनमैन राकेश कुमार पुत्र मनोहर लाल निवासी दत्तमपुर में खादर फीडर पर कार्य करने के लिए 2 जून को सब स्टेशन ऑपरेटर गौरव कुमार से खादर फीडर और छातांगा फीडर का शटडाउन लिया था। गौरव कुमार ने छातांगा फीडर का शटडाउन कर दिया। लेकिन खादर फीडर का शटडाउन नहीं किया। इस दौरान पोल पर काम करने के लिए चढ़ा लाइनमैन राकेश कुमार करंट लगने के कारण पोल से नीचे गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल लाइनमैन राकेश कुमार को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। अधिकारियों ने जब इस मामले की जांच कराई तो पता चला कि ड्यूटी पर तैनात सब स्टेशन ऑपरेटर गौरव कुमार ने लापरवाही बरतते हुए खादर फीडर का शटडाउन नहीं किया था जिस कारण यह घटना हुई। जेई की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और जांच पड़ताल कर रही है।

## नोएडा स्टेडियम में हजारों लोगों ने किया योग

**नोएडा (चेतना मंच)।** आज 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर नोएडा के सेक्टर-21ए स्थित नोएडा इंडोर स्टेडियम में हजारों लोगों ने योगासन किया। स्टेडियम में मौजूद लोगों ने योगासन की विभिन्न क्रियाओं को किया। इस दौरान नोएडावासियों में योग के प्रति भारी उत्साह देखा गया।

11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर नोएडा के सेक्टर-21ए स्थित नोएडा इंडोर स्टेडियम में हुए कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग के मंत्री तथा जनपद गौतमबुद्धनगर के प्रभारी कुंवर बृजेश सिंह, भाजपा के नोएडा महानगर अध्यक्ष महेश चौहान, उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती विमला बाथम, क्षेत्रीय मंत्री विजेंद्र नागर, पूर्व महानगर अध्यक्ष मनोज गुप्ता, गौतमबुद्धनगर के जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा, मुख्य विकास अधिकारी विद्यानाथ शुक्ला, जिला होम्योपैथिक चिकित्सा अधिकारी डॉ प्रीती सिंघल, क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डॉ. धर्मेंद्र कुमार केम, भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश मीडिया प्रभारी अमित त्यागी, उमेश त्यागी, गणेश जाटव, डिंपल आनंद, चंदगीराम यादव, संजय बाली, मनीष शर्मा, भूपेश चौधरी, अशोक मिश्रा, रामनिवास यादव, ओमवीर अवाना, शिवांश श्रीवास्तव, विनोद त्यागी, राहुल शर्मा, अर्पित मिश्रा, तन्मय शंकर, चमन अवाना, महेश अवाना, योगेन्द्र चौधरी, पुनीत शुक्ला, अनुज गुप्ता, विकास जैन समेत सैकड़ों भाजपा के पदाधिकारी व कार्यकर्ता तथा सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी एवं नोएडा शहर के अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

## ग्रेटर नोएडा का प्रोपर्टी डीलर तीन दिनों से लापता

**ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)।** ग्रेटर नोएडा के ग्राम हबीबपुर से एक प्रॉपर्टी डीलर पिछले तीन दिनों से लापता है। गायब प्रॉपर्टी डीलर की तलाश करने के बाद परिजनों ने इस मामले में थाना ईकोटेक-3 में शिकायत दर्ज कराई है।

ग्रेटर नोएडा के थाना ईकोटेक-3 में दर्ज गुमशदी की रिपोर्ट में बताया गया है कि ग्राम हबीबपुर के रहने वाले रोहित पुत्र अजीत सिंह बीते 18 जून को अपने ऑफिस के लिए निकले थे रोहित प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करते हैं। देर रात तक जब रोहित घर नहीं लौटे तो परिजनों ने उनसे संपर्क करने का प्रयास किया लेकिन उनका मोबाइल फोन भी बंद था। इस संबंध में रोहित के परिजनों ने किसी दुर्घटना की आशंका जताते हुए थाना ईकोटेक-3 में गुमशुदी की रिपोर्ट दर्ज कराई है।

थाना ईकोटेक-3 पुलिस के मुताबिक पुलिस ने गुमशुदी की रिपोर्ट दर्ज कर ली है और रोहित का पता लगाने का प्रयास कर रही है। वहीं पिछले तीन दिनों से रोहित के बारे में कोई सुराग न मिलने के कारण परिजनों का हाल बेहाल है। ग्राम हबीबपुर में रहने वाले रोहित के परिजनों ने सोशल मीडिया पर भी रोहित को ढूंढने के लिए मदद मांगी है और एक फोन नंबर भी सोशल मीडिया पर जारी किया है।

## सीईओ ने निरोग रहने के दिए 10 टिप्स

**नोएडा (चेतना मंच)।** सेक्टर-6 स्थित इंदिरा गांधी कला केन्द्र परिसर में नोएडा प्राधिकरण के सीईओ डॉ. लोकेश एम के नेतृत्व में सैकड़ों अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने योगाभ्यास किया।

इस दौरान सीईओ डॉ. लोकेश एम ने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को निरोग व स्वस्थ्य रहने के लिए 10 टिप्स भी बताए। जिनका पालन करके वे शारीरिक व मानसिक रूप से निरोग रह सकते हैं। इस मौके पर सीईओ के अलावा एसीईओ, ओएसडी इंदु प्रकाश सिंह, क्रांति शेखर, मोहिंदर प्रसाद, महाप्रबंधक एसपी सिंह, डीजीएम (सिविल) विजय रावल, वरिष्ठ प्रबंधक गौरव बंसल, आर.के. शर्मा, कपिल सिंह, अशोक वर्मा समेत कई अधिकारी तथा कर्मचारी मौजूद थे।

## झगड़ा सुलझाने आये लोगों को पीटा

**ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)।** दो पक्षों के बीच हो रही मारपीट में बीच बचाव करना कुछ लोगों को भारी पड़ा। मारपीट कर रहे लोगों ने अपना झगड़ा बंद कर बीच बचाव करने वाले लोगों को ही पीट दिया। मारपीट में तीन लोग घायल हो गए पीड़ित ने थाना दादरी में आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है।

दादरी के नयादरगंज मोहल्ले में रहने वाले वरुण गोयल ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि 20 जून को उनका छोटा भाई तरुण गोयल व उसके चाचा संदीप गोयल अपने फार्म के सामने खड़े हुए थे पड़ोसी फॉर्म मैसर्स ज्ञानमल चिरंजीलाल फर्म के कर्मचारी बब्बू निवासी प्यावली व शीरिया निवासी घोड़ी बछेड़ा के बीच झगड़ा हो रहा था। इस दौरान उसके भाई व चाची ने दोनों के बीच बीच बचाव की कोशिश करने का प्रयास किया। आपस में झगड़ा कर रहे बब्बू ने कई लोगों को मौके पर बुला लिया। मौके पर आए लोग लाठी डंडों से लैस थे। इन लोगों ने आते ही तरुण गोयल, संदीप गोयल व शीरिया,के साथ लाठी डंडों से मारपीट की। मारपीट करने के बाद आरोपी जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए।

वरुण गोयल के मुताबिक इस घटना में उसके भाई चाचा व एक अन्य व्यक्ति को चोटें आई है। थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच की जा रही है।

## विश्व को योग से जोड़ने का श्रेय मोदी जी को: नवाब सिंह नागर

**नोएडा (चेतना मंच)।** आज अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर शहीद भगत सिंह मंडल के अंतर्गत नोएडा के सेक्टर 92 स्थित बायो डायवर्ट सिटी पार्क में योगाभ्यास कार्यक्रम में पूर्व मंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता नवाब सिंह नागर ने सहभागिता की।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह ऐतिहासिक दिवस हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शिता और सांस्कृतिक चेतना का परिणाम है, जिन्होंने पूरे विश्व को योग से जोड़ा।

योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि आंतरिक शांति, स्वास्थ्य और आत्मबल का मार्ग है एवं आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का माध्यम भी है।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से शहीद भगत सिंह मंडल के अध्यक्ष गौतम शर्मा, महानगर महामंत्री डिम्पल आनंद, मीडिया प्रमुख तन्मय शंकर, कार्यक्रम के संयोजक अमित त्यागी, सह संयोजक राजीव उपाध्याय, प्रज्ञा ठाकुर, राम मेहर कौशिक, अशोक मिश्रा एवं कार्यकर्ता एवं प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

## चरमराता ईलाज

यह तथ्य किसी से छिपा नहीं कि पंजाब के सरकारी अस्पताल मरीजों के बढ़ते बोझ से चरमरा रहे हैं। समाज के गरीब व निम्न मध्यमवर्गीय मरीजों के उपचार की अंतिम शरण स्थली ही होते हैं सरकारी अस्पताल। विडंबना यह है कि सरकारी अस्पताल खुद ही डॉक्टरों की कमी से जूझ रहे हैं। आंकड़ों की बात करें तो सरकारी अस्पतालों के लिये स्वीकृत पदों में आधे पद फिलहाल खाली है। नई पीढ़ी के डॉक्टर मरीजों के दबाव व आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के अभाव के चलते सरकारी अस्पतालों को कार्यस्थली बनाने से गुरेज करते रहे हैं। निस्संदेह, निजी क्षेत्र में मोटी तनख्वाह व सुविधाएं उन्हें आकर्षित करती हैं। इधर विदेशों का मोह भी उन्हें खूब लुभाता है। यही वजह है कि ग्रामीण ही नहीं, शहरी सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों की भारी कमी है। विशेषज्ञ चिकित्सकों की तो ज्यादा ही कमी है। इस समस्या से निबटने के लिये पंजाब सरकार इस सत्र से एमबीबीएस और बीडीएस के छात्रों के लिए बॉन्ड नीति लेकर आई है। निश्चय ही सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में डॉक्टरों की पुरानी कमी से निपटने के लिये एक ऐसा साहसिक कदम उठाना बेहद जरूरी था। नये नियमों के तहत, राज्य सरकार द्वारा संचालित मेडिकल कॉलेजों से स्नातक करने वाले डॉक्टरों को दो साल के लिये अनिवार्य रूप से सरकारी स्वास्थ्य सेवा संस्थानों में सेवा करनी होगी। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो बीस लाख रुपये की बॉन्ड राशि का भुगतान करना होगा। वहीं अखिल भारतीय कोटे के तहत स्नातकों को अनिवार्य रूप से एक साल की सेवा सरकारी स्वास्थ्य सेवा संस्थानों में देनी होगी। हालांकि, यह नीति बाध्यकारी है, लेकिन यह सुनिश्चित करने का एक जिम्मेदार प्रयास है कि राज्य चिकित्सा शिक्षा में निवेश का कुछ लाभ राज्य के लोगों को भी मिलना चाहिए। यह तार्किक बात है कि सरकारी मेडिकल कॉलेजों को राज्य सरकार भारी सब्सिडी भी देती है। दूसरे शब्दों में कहें तो राज्य के मेडिकल कॉलेजों की सीटों के लिये करदाताओं द्वारा एक अंशदान दिया जाता है। यह उचित होगा कि छात्र स्नातक होने के बाद समाज में कुछ योगदान जरूर दें। यह इसलिये भी जरूरी है कि राज्य के सरकारों अस्पतालों में डॉक्टरों की भारी कमी है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो स्थिति बहुत अधिक विकट है क्योंकि आमतौर डॉक्टर ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने से कतराते हैं। बताया जाता है कि राज्य के सरकारी अस्पतालों में स्वीकृत डॉक्टरों के 3,847 पदों में पचास फीसदी पद रिक्त हैं। सरकारी अस्पतालों में पर्याप्त चिकित्सकों के न होने का खमियाजा मरीजों को चिकित्सा सुविधाओं के अभाव के रूप में भुगतना पड़ता है। उन्हें मजबूरी में निजी अस्पतालों के महंगे उपचार लेने के लिये बाध्य होना पड़ता है। वर्षों से यह ट्रेंड चला आ रहा है कि डॉक्टर निजी प्रैक्टिस या विदेशों में बेहतर अवसरों की तलाश में सार्वजनिक चिकित्सा सेवा से किनारा करते रहे हैं। जिसके चलते शहरी-ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के बीच में एक बड़ा अंतर पैदा हो गया है। निश्चित रूप से बॉन्ड नीति इस असंतुलन को दूर करने की दिशा में प्रयास करेगी। इसके साथ ही कतिपय छात्र समूहों का बॉन्ड नीति का विरोध भी समझ में आता है। लेकिन बॉन्ड नीति को खत्म करने की बजाय उनकी चिंता बेहतर कामकाजी परिस्थितियां बनाए जाने के लिये हो। साथ ही कैरियर प्रगति के बेहतर अवसरों के मुद्दों को भी संबोधित किए जाने की जरूरत है। निस्संदेह, एक साल या दो साल का अनिवार्य कार्यकाल एक उचित मांग है, खासकर जब यह कदम सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूती दे सके। वैसे पंजाब सरकार की बॉन्ड नीति कोई नई बात नहीं है। पहले ही कई केंद्रीय संस्थानों और अन्य राज्यों में इसी तरह के मॉडल काम कर रहे हैं। पंजाब को यह सुनिश्चित करना होगा कि इस नीति का प्रभावी क्रियान्वयन हो। समय पर नियुक्तियां हों और युवा स्नातकों को पर्याप्त प्रोत्साहन मिले। निस्संदेह, स्वास्थ्य सेवाओं को सुधारने के लिये और अधिक देरी नहीं की जा सकती। निस्संदेह, यह बॉन्ड रूपी बंधन शिक्षा और समाज सेवा के बीच एक सेतु का काम करेगा। भगवान का दूसरा रूप कहे जाने वाली चिकित्सा बिरादरी को भी इस भरोसे को कायम रखना होगा।

## रामचरित मानस

**कल के अंक में आपने पढ़ा था कि ( पहले ) वहाँ बड़े-बड़े योद्धा राक्षस रहते थे। देवताओं ने उन सबको युद्ध में मार डाला। अब इंद्र की प्रेरणा से वहाँ कुबेर के एक करोड़ रक्षक ( यक्ष लोग ) रहते हैं॥ उससे आगे का वर्णन क्रमानुसार प्रस्तुत है।**

**दसमुख कतहुँ खबरि असि पाई। सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई॥**
**देखि बिकट भट बडि कटकाई। जच्छ जीव लै गए पराई॥**

रावण को कहीं ऐसी खबर मिली, तब उसने सेना सजाकर किले को जा घेरा। उस बड़े विकट योद्धा और उसकी बड़ी सेना को देखकर यक्ष अपने प्राण लेकर भाग गए॥

**फिरि सब नगर दसानन देखा। गयउ सोच सुख भयउ बिसेषा॥**
**सुंदर सहज अगम अनुमानी। कीन्हि तहाँ रावन रजधानी॥**

तब रावण ने घूम-फिरकर सारा नगर देखा। उसकी (स्थान संबंधी) चिन्ता मिट गई और उसे बहुत ही सुख हुआ। उस पुरी को स्वाभाविक ही सुंदर और (बाहर वालों के लिए) दुर्गम अनुमान करके रावण ने वहाँ अपनी राजधानी कायम की॥

**जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे। सुखी सकल रजनीचर कीन्हें॥**
**एक बार कुबेर पर धावा। पुष्पक जान जीति लै आवा॥**

योग्यता के अनुसार घरों को बाँटकर रावण ने सब राक्षसों को सुखी किया। एक बार वह कुबेर पर चढ़ दौड़ा और उससे पुष्पक विमान को जीतकर ले आया॥

( क्रमशः... )

# इजरायल-ईरान युद्ध में भारत निभा सकता है अहम भूमिका

रूस-यूक्रेन एवं इजरायल-हमास के बीच युद्ध अभी समाप्त भी नहीं हुआ है और तीसरे मोर्चे इजरायल-ईरान के बीच भी युद्ध प्रारम्भ हो गया है। हालांकि इस बीच भारत-पाकिस्तान के बीच भी युद्ध छिड़ गया था परंतु भारत की बड़े भाई की भूमिका के चलते इस युद्ध को शीघ्रता से समाप्त करने में सफलता मिल गई थी। दो देशों के बीच युद्ध में किसी एक देश का फायदा नहीं होकर बल्कि दोनों ही देशों का नुकसान ही होता है। परंतु, आवेश में आकर कई बार दो बड़े देश भी आपस में टकरा जाते हैं एवं इन दोनों देशों के पक्ष एवं विपक्ष में कुछ देश खड़े हो जाते हैं जिससे कुछ इस प्रकार की परिस्थितियां निर्मित हो जाती हैं कि विश्व युद्ध छिड़ जाते हैं। वर्ष 1914 से वर्ष 1918 के बीच प्रथम विश्व युद्ध एवं वर्ष 1939 से वर्ष 1945 के बीच द्वितीय विश्व युद्ध इसके उदाहरण हैं। इजरायल-ईरान के बीच हाल ही में प्रारम्भ हुए युद्ध में अमेरिका भी कूदने की तैयारी करता हुआ दिखाई दे रहा है। अगर ऐसा होता है तो बहुत सम्भव है कि ईरान की सहायता के लिए रूस एवं चीन भी इस युद्ध में कूद पड़ें एवं यह युद्ध तृतीय विश्व युद्ध का स्वरूप ले ले। ऐसा कहा जा रहा है कि इजरायल एवं अमेरिका ईरान में सत्ता परिवर्तन करवाना चाह रहे हैं ताकि ईरान में उनके हितों को साधने वाली सरकार स्थापित हो सके।

वैश्विक स्तर पर आज परिस्थितियां बहुत सहज रूप से नहीं चल रही है। विभिन्न देशों के बीच विश्वास की कमी हो गई है जिसके चलते छोटे छोटे मुद्दों को तूल दी जाकर आपस में खटास पैदा करने के प्रयास हो रहे हैं। कुछ देश, दो देशों के बीच, इन मुद्दों को हवा देते हुए भी दिखाई दे रहे हैं। जैसे आतंकवाद के मुद्दे को ही लें, यदि ये देश आतंकवाद से स्वयं ग्रसित हैं तो इनके लिए आतंकवाद बुराई की जड़ है और यदि कोई अन्य देश आतंकवाद को लम्बे समय से झेल रहा है तो इन देशों के लिए आतंकवाद कोई बहुत बड़ा मुद्दा नहीं है। बल्कि, आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले देशों को प्रोत्साहन दिया जाता हुआ दिखाई दे रहा है। चौधरी बन रहे कुछ देश अपनी विस्तरवादी नीतियों के चलते कई देशों में अपने हित साधने वाली सरकारों की स्थापना करना चाह रहे हैं एवं इन देशों में इस प्रकार की परिस्थितियां निर्मित करने के प्रयास कर रहे हैं ताकि ये देश आपस में लड़ाई प्रारम्भ करें। रूस एवं यूक्रेन के बीच युद्ध इसका जीता जागता उदाहरण है । साथ ही, कुछ देशों की कथनी और करनी में पाए जाने वाले फर्क के चलते भी वैश्विक स्तर पर परिस्थितियां बिगड़ रही हैं। चौधरी बन रहे देशों को तो उदाहरण पेश करते हुए अपनी कथनी एवं करनी में फर्क को समाप्त करना ही होगा। अन्यथा, वैश्विक स्तर पर परिस्थितियां भयावह स्तर तक पहुंच सकती हैं।

चूंकि इजरायल भी आतंकवाद से पीड़ित देश है एवं इजरायल की सीमाएं चार मुस्लिम राष्ट्रों से जुड़ी हुई हैं; यथा, उत्तर में लेबनान, दक्षिण पश्चिम में ईजिप्ट (एवं गाजा), पूर्व में जॉर्डन (एवं वेस्ट बैंक) एवं उत्तर पूर्व में सीरिया। अतः इजरायल अत्यधिक आक्रात्मकता

**वैश्विक स्तर पर आज परिरिस्थितियां बहुत सहज रूप से नहीं चल रही है। विभिन्न देशों के बीच विश्वास की कमी हो गई है जिसके चलते छोटे छोटे मुद्दों को तूल दी जाकर आपस में खटास पैदा करने के प्रयास हो रहे हैं। कुछ देश, दो देशों के बीच, इन मुद्दों को हवा देते हुए भी दिखाई दे रहे हैं।**

के साथ आतंकवादियों (हम्मास एवं हूती आदि संगठनों) से युद्ध करता रहता है। इस्लाम के अनुयायी यहूदियों के कट्टर दुश्मन हैं, इसके चलते भी इजरायल के नागरिकों को आतंकवाद को लम्बे समय से झेलना पड़ रहा है।

ईरान के बारे में तो कहा जा रहा है कि ईरान स्थित लगभग 60 प्रतिशत मस्जिदों में इबादत के लिए कोई भी व्यक्ति पहुंच ही नहीं रहा है क्योंकि ईरान में एवं ईरान द्वारा पड़ोसी देशों में फैलाए गए आतंकवाद से ईरान के मूल नागरिक अत्यधिक परेशान हैं। महिलाओं पर आतंकवादियों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों से स्थानीय नागरिक बहुत दुखी हैं। अतः अब वे अपने पुराने धर्म जोरोस्ट्रीयन को अपनाने के लिए आतुर दिखाई दे रहे हैं अथवा इस्लाम धर्म का परित्याग करना चाह रहे हैं। जोरोस्ट्रीयन, ईरान का मूल धर्म हैं एवं यह अब ईरान के कुछ (बहुत कम) क्षेत्रों में सिमट कर रह गया है। भारत में भी जोरोस्ट्रीयन धर्म को मानने वाले पारसी समुदाय के कुछ नागरिक शांतिपूर्वक रह रहे हैं एवं भारत के आर्थिक विकास में अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर निर्मित हो रही उक्त वर्णित परिस्थितियों के बीच भारत की विशेष भूमिका रह सकती है क्योंकि भारत के इजरायल एवं ईरान दोनों ही देशों के साथ आर्थिक रिश्ते बहुत मजबूत हैं। भारत, ईरान से भारी मात्रा में कच्चा तेल खरीदता रहा है एवं भारत ने ईरान में चाबहार बंदरगाह के निर्माण में भारी आर्थिक एवं तकनीकी सहायता प्रदान की है। चाबहार बंदरगाह का संचालन भी ईरान की सरकार के साथ भारतीय इंजीनियरों द्वारा ही किया जा रहा है। भारत और ईरान के बीच प्रतिवर्ष 200 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की राशि का विदेशी व्यापार होता है। दूसरी ओर, इजरायल भारत का रणनीतिक साझीदार है। भारत इजरायल से भारी मात्रा में सुरक्षा उपकरण भी खरीदता है। भारत और इजरायल के बीच प्रतिवर्ष 650 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की राशि का विदेशी व्यापार होता है, इसमें भारत द्वारा इजरायल से आयात किये जाने वाले सुरक्षा उपकरणों की राशि शामिल नहीं है। कुल मिलाकर, भारत के इजराईल एवं ईरान, दोनों देशों के साथ बहुत पुराने व्यापारिक एवं सांस्कृतिक रिश्ते हैं।

भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति में वसुधैव कुटुम्बकम; सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय एवं सर्वे भवंतु सुखिन की भावना पर विश्वास किया जाता है। अतः भारतीय नागरिक सामान्यतः शांत स्वभाव के होते है एवं पूरे विश्व में ही भ्रातत्व के भाव का संचार करते हैं। आज 4 करोड़ से अधिक भारतीय मूल के नागरिक विभिन्न देशों के आर्थिक विकास में अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं। इन देशों में होने वाले अपराधों में भारतीय मूल के नागरिकों की संलिप्तता लगभग नहीं के बराबर पाई गई है। इसी कारण के चलते आज वियतनाम, जापान, इजरायल, आस्ट्रेलिया एवं सिंगापुर जैसे कई देश भारतीय मूल के नागरिकों को अपने देश में कार्य करने एवं बसाने में सहायता करते हुए दिखाई दे रहे हैं। खाड़ी के देश यथा ओमान, बहरीन, सऊदी अरब, यूनाइटेड अरब अमीरात आदि में भी लाखों की संख्या में भारतीय मूल के नागरिक निवास कर रहे हैं एवं शांतिप्रिय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कुल मिलाकर, विभिन्न देशों में निवासरत भारतीय मूल के नागरिकों का रिकार्ड बहुत ही संतोषजनक पाया जाता है, क्योंकि, भारतीयों की मूल प्रकृति ही सनातन हिंदू संस्कारों के अनुरूप पाई जाती है एवं वे किसी भी प्रकार के कर्म में धर्म को जोड़कर ही इसे सम्पन्न करने का प्रयास करते हैं। और, धर्म के अनुरूप किये गए किसी भी कार्य से किसी का अहित हो ही नहीं सकता।

उक्त वर्णित परिप्रेक्ष्य में वैश्विक स्तर पर जब चौधरी बन रहे देशों द्वारा अन्य देशों के साथ न्याय नहीं किया जाता हुआ दिखाई दे रहा है तो ऐसे में भारत को आगे आकर युद्ध में झौंके जा रहे देशों के नागरिकों की मदद करनी चाहिए। भारत की तो वैसे भी नीति ही वसुधैव कुटुम्बकम की है। यदि पूरे विश्व में भाईचारा फैलाना है तो सनातन हिंदू संस्कृति के अनुपालन से ही यह सब सम्भव हो सकता है। उक्त परिस्थितियों के बीच सनातन हिंदू संस्कृति की स्वीकार्यता विभिन्न देशों के नागरिकों की बीच तेजी से बढ़ भी रही है क्योंकि कई देश अब आतंकवाद से बहुत अधिक परेशान हो चुके हैं। अतः अब वे किसी तीसरे रास्ते की तलाश में हैं। इन विपरीत परिस्थितियों के बीच उनके पास अब विकल्प केवल सनातन हिंदू संस्कृति के संस्कारों को अपनाने का ही बचता है, जिसके प्रति वे लालायित भी हैं। और फिर, आतंकवाद से यदि छुटकारा पाना है तो इससे लड़ते हुए छुटकारा पाने में तो कुछ देशों को कई प्रकार के बलिदान देने पड़ सकते हैं और यदि सनातन हिंदू संस्कृति के संस्कारों को स्वीकार कर लिया जाता है तो कई देशों के नागरिकों को इस बलिदान से बचाया जा सकता है। अतः विश्व के देशों में सनातन हिंदू संस्कृति के संस्कारों को तेजी से वहां के स्थानीय नागरिकों के बीच किस प्रकार फैलाया जा सकता है, इस विषय पर विश्व में शांति स्थापित करने के उद्देश्य से अब गहन चिंतन एवं मनन करने की आवश्यकता है।

**-प्रहलाद सबनानी**
**सेवानिवृत्त उपमहाप्रबंधक**

## भौंकता है, पर काटता नहीं (व्यंग्य)

बचपन में दादी कहती थीं—बिटवा, भौंकता है, पर काटता नहीं, ऐसे ही कुत्ते से मत डरना! लेकिन अब लगता है, दादी को शहर के बंगलों की जानकारी नहीं थी। वहाँ के कुत्ते पहले भौंकते हैं, फिर घूरते हैं, फिर काटते नहीं... लेकिन अस्पताल का रास्ता ज़रूर दिखा देते हैं। हमारी भी एक ऐसी ही मुलाकात थी एक बँगलेवाले कुत्ते से, जो 'हैलो' से पहले ही 'भौं-भौं' करता था और 'अलविदा' के समय 'गुर्र-गुर्र'। मानो कह रहा हो—जा, जी ले अपनी ज़िंदगी! मैंने कहा, भाई, तेरे मालिक की चाय पीने आया हूँ, तुझसे शादी थोड़ी करनी है! पर उसे मानो संविधान में संशोधन करना हो, हर आने-जाने वाले का बैरिकेटिंग चेकअप कर डालता।

फाटक पर लिखा था—बिवेर ऑफ डॉग। पर मन में खटका—डॉग के लिए लिखा है या मालिक के लिए? क्योंकि दोनों एक जैसे दिखते थे—रौबदार, गुर्राते हुए और जब देखो तब भौंकने को तैयार। जब मालिक ने दरवाज़ा खोला तो कुत्ता पहले झपटा, फिर पीछे हटा। शायद उसे मेरे चेहरे में नाथूराम दिखा हो। मैंने धीमे से कहा—भाई, गोली नहीं लाया, बस दो बिस्कुट लाया हूँ। मालिक ने हँसते हुए कहा, अरे डरो मत, ये तो बड़ा शरीफ है। और मैं सोचने लगा—शरीफ तो वो होते हैं जो भौंकते नहीं। ये शरीफ है या शहर का सीरियल किलर?

हमारी तीन दिन की मजबूरी थी उस बँगले में ठहरने की। रात को छत पर सोते हुए महसूस होता कि कोई लगातार घूर रहा है। नीचे देखा, तो साहब का टाइगर—नाम तो टाइगर, पर हरकतें पिंकू की तरह—चारपाई पर लेटा, झबरीली आँखों से घूरता हुआ जैसे कह रहा हो—तू मेरे लॉन में कैसे सो गया? और मैं, आत्मग्लानि में डूबा—ओह! मैं एक मध्यवर्गीय इंसान और ये उच्चवर्गीय कुत्ता, हम एक ही अहाते में हैं। कहीं देश का त्तष्ठक्क तो नहीं गिरा? कुत्ते का टशन देख मैंने मन में दोहराया—ग़रीब आदमी को सिर्फ़ आदमी ही नहीं, कुत्ता भी नीचा दिखाता है!

शाम को जब लॉन में बैठकर चाय पी रहे थे, तो नौकर टाइगर को टहला रहा था। इतने में फाटक के बाहर दो 'नॉन-बँगला-रेजिडेंट' कुत्ते आ गए। वे सड़किया, भटकती आत्माएँ, भूख से झूलते हुए, हमारे टाइगर को देख रहे थे—मानो कह रहे हों, ओ रे बाबू, तु बड़ा आदमी बन गया रे! टाइगर ने तुरंत भौंकना शुरू कर दिया। और उन दोनों ने शर्म से सिर झुका लिया, जैसे इंटरव्यू में फेल हो गए हों। मैंने मेज़बान

से पूछा, ये उनके पीछे क्यों भौंकता है? मेज़बान ने कहा, वो तो इसकी रोज़ की आदत है। मैंने कहा, क्लासिक केस है—सफलता के बाद रिश्तेदारों से मुँह मोड़ना!

रात को टाइगर चुपचाप पड़ा था। पास में ही दोनों सड़किया कुत्ते फिर से आ गए और मोहल्ले में भौंकने लगे। आश्चर्य यह कि टाइगर भी उनके साथ आवाज़ मिलाने लगा। लगा जैसे 'भौंकना' यूनियन की हड़ताल हो और टाइगर उसमें मोर्चा संभाले। मैंने कहा, वाह, ये तो राजनीतिक कुत्ता निकला। सुबह पूँजीवादी, रात को सर्वहारा। टाइगर की भौंक अब मुझे आंदोलन लगने लगी। पर अगली सुबह जो दृश्य देखा, उसने आत्मा को रुला दिया। टाइगर गेट के बाहर पड़ा था, लहूलुहान। दोनों आवारा कुत्तों ने उसकी धुनाई कर दी थी—जैसे कह रहे हों, अबे ग़द्दार, भौंकता हमारे साथ है, पर दिखावा करता है अमीर बनने का!

मालिक बोले, नौकर की गलती से गेट खुल गया और ये निकल गया। दोनों कुत्ते घात में थे। मैंने कुत्ते की तरफ देखा। उसकी आँखों में पश्चाताप था—मानो कह रहा हो, काश मैं अपनी औकात नहीं भूलता। उसकी चुप्पी में एक गहरी पुकार थी—मैं अब जान गया हूँ, मैं कौन हूँ। अब वह भौंक भी नहीं रहा था, बस कभी-कभी कराहता था, जैसे कह रहा हो—बेवफ़ाई की सज़ा मिली है, मालिक... पट्टे को भगवान समझ लिया था।

लौटते समय मेरा मन भारी था। टाइगर को देखा—उसकी आँखें भीगी थीं, मेरी भी। शायद वह कहना चाह रहा था, सिस्टम ने मुझे ये बनाया, मैं कौन था, ये भूला दिया। और मैंने सिर झुका लिया। पीछे से दो सड़किया कुत्ते फिर आ गए थे, वे चुपचाप देख रहे थे। वे अब नहीं भौंक रहे थे। शायद कह रहे हों—अब ये हमारा है। अब ये भौंकता नहीं, सोचता है।

और मैं बुदबुदाया—भौंकने से आदमी बड़ा नहीं होता...कभी-कभी चुप्पी उसकी जात बता देती है।

**- डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'**

## राशिफल

**आषाढ़ माह कृष्ण पक्ष दशमी** | **(विक्रम संवत् 2082)**

**मेष- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)**
थोड़ी सी, बिल्कुल क्लियर नहीं रहेगी, अवसादित रहेगी। या आप कह सकते हैं थोड़ी सी असमंजस की स्थिति बनी रहेगी।

**वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे , वो)**
भूमि, भवन और वाहन की खरीदारी में नुकसान हो सकता है या नहीं हो सकता है। स्वास्थ्य ठीक है।

**मिथुन- (का, की, कु, घ, ड , छ, के, हो, हा)**
व्यापारिक स्थिति मध्यम रहेगी। नाक, कान, गला की बड़ी परेशानी हो सकती है। स्वास्थ्य मध्यम, प्रेम, संतान अच्छा।

**कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)**
मुख रोग के शिकार हो सकते हैं। धन हानि के संकेत हैं। स्वास्थ मध्यम, प्रेम, संतान अच्छा, व्यापार भी अच्छा।

**सिंह- (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे)**
ऊर्जा का स्तर घटता बढ़ता रहेगा। मानसिक स्थिति थोड़ी सी गड़बड़ रहेगी। घबराहट, बेचैनी बनी रहेगी।

**कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)**
सिर दर्द, नेत्र पीड़ा, कर्ज की स्थिति। खर्च की अधिकता। स्वास्थ्य मध्यम, प्रेम, संतान अच्छा। व्यापार अच्छा।

**तुला- (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, त)**
आय में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मन थोड़ा सा ससंकित रहेगा। डर बना रहेगा। प्रेम, संतान भी मध्यम है।

**वृश्चिक- (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)**
कोर्ट कचहरी से बचें। पिता के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। प्रेम, संतान अच्छा है।

**धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ठा, भे)**
अपमानित होने का भय रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा है। प्रेम, संतान की स्थिति अच्छी है। व्यापार भी अच्छा है।

**मकर- (भो,जा,जी,जू,जे,जो,खा,खी,खू,खे,गा,गी)**
चोट चपेट लग सकती है। किसी परेशानी में पड़ सकते हैं। परिस्थितियां प्रतिकूल हैं।

**कुम्भ- (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, षो, द)**
स्वयं के स्वास्थ्य पर और जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। गुदा से संबंधित कुछ बड़ी परेशानी हो सकती है।

**मीन- (दी, दु, झ, ध, दे, दो, च, चा, चि)**
स्वास्थ्य प्रभावित दिख रहा है। शत्रु पर दबदबा कायम रहेगा। गुण, ज्ञान की प्राप्ति होगी।

# किसी भी दिन घट सकती है स्पोर्ट्स लैंड फार्महाउस में बड़ी घटना

**ग्रेटर नोएडा ( चेतना मंच )।** सेक्टर-151 स्थित स्पोर्टस लैंड फार्म हाउस में गत दिवस हुए फायरिंग का मामला अभी शांत नहीं हुआ है और किसी भी दिन जमीन बंटवारे को लेकर बड़ी घटना घट सकती है। बतातें चलें कि अभी कुछ दिन पूर्व स्पोर्टस लैंड फार्म हाउस में जमीन बंटवारे को लेकर भारत शर्मा एवं उनके भाई नीरज शर्मा तथा गौरव राठी के बीच जमकर कई राउंड गोलियां चलीं।

सूचना पर मोके पर पहुंची पुलिस ने 10 लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। लेकिन यह मामला अभी भी शांत नहीं हुआ है। क्योंकि नीरज शर्मा अभी भी अपनी दावेदारी फार्महाउस पर कर हैं उनका आरोप है कि उनके भाई भारत शर्मा ने जबरदस्ती फार्म हाउस पर कब्जा कर रखा है। इसमें स्थानीय पुलिस की भी भूमिका संदिग्ध है। यदि समय रहते पुलिस एवं प्रशासन के आला अफसर इस प्रकरण पर ध्यान नहीं दिये तो किसी भी दिन बड़ी घटना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

# हिंदू और बौद्ध रीति से कराया सामूहिक विवाह

**नोएडा ( चेतना मंच )।** सेक्टर-51 स्थित डायमंड क्रॉउन बैंक्विट हॉल में श्री राम सेवा समिति ने हिंदू एवं बौद्ध रीति-रिवाज से कई जोड़ों का विवाह कराया।

संस्था के अध्यक्ष बृज किशोर गुप्ता (बोबी) ने बताया कि यह हमारा चतुर्थ सामूहिक विवाह समारोह है, हम पिछले 4 वर्षों से लगातार सामूहिक विवाह का आयोजन कर रहे हैं जिसमें अब तक 60 जोड़ों की शादियाँ करा चुके है। लेकिन नोएडा में यह हमारा पहला आयोजन हैं, इस बार हमें नोएडा निवासी मनीषा, प्रियंका, सोनिया तीन बेटियों की शादी कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आज मनीषा की अनमोल और प्रियंका की गौरव के साथ हिंदू रीति रिवाज से विवाह संपन्न कराया गया वहीं सोनिया का देवेंद्र के साथ बौद्ध रीति रिवाज से विवाह कराया गया।

उन्होंने बताया कि हमने वर और वधू दोनों पक्षों की तरफ से 50-50 लोगों को आमंत्रित किया है, हमने बेटियों को कान के झुमके, नाक की नथ, पायल, बिछुये, हाथ की घड़ी के साथ साथ जीवन उपयोगी जैसे बेड, अलमारी, वाशिंग मशीन, फ्रिज, टीवी, सिलाई मशीन, जूसर, चेयर टेबल और अन्य घरेलू समान उपहार स्वरूप भेंट किये है।

इस विवाह समारोह में समिति के पदाधिकारी प्रदीप गुप्ता, नवीन गुप्ता, कार्यक्रम संयोजक आशुतोष मिश्रा का विशेष योगदान रहा ।

# योग से हम रह सकते हैं निरोग : प्रणीत भाटी

**ग्रेटर नोएडा ( चेतना मंच )।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आज भारतीय जनता पार्टी दादरी ग्रामीण मंडल की ओर से बोड़ाकी में योग शिविर का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के प्रथम जिला अध्यक्ष रहे एवं गौतमबुद्धनगर लोकसभा क्षेत्र के संयोजक प्रणीत भाटी एवं जिला महामंत्री भाजपा मनोज गर्ग ने लोगों के साथ योग किया।

इस अवसर पर भाजपा दादरी ग्रामीण मंडल के अध्यक्ष संजय भाटी भी मौजूद रहे। इस अवसर पर लोगों को संबोधित करते हुए भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष प्रणीत भाटी ने कहा कि योग सभी को करना चाहिए और योग से ही हम निरोग रह सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज पूरे विश्व में योग दिवस मनाया जा रहा है इसमें सभी लोगों की हिस्सेदारी होगी तभी यह सफल हो पाएगा। उन्होंने कहा कि आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में योग करना नितांत आवश्यक है।

# सीईओ को सौंपा ज्ञापन

**ग्रेटर नोएडा ( चेतना मंच )।** ग्रेटर नोएडा शहर की पहचान 'परी चौक' की जर्जर हालत को लेकर कल ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ को एक ज्ञापन सौंपा।

शहर की पहचान 'परी चौक' जिसकी स्थिति बद से बदतर हो रही है पिछले 2/3 महीने इसकी सिकायत की गई थी परी चौक की दीवारें टूटी हुई है। परी चौक गोल चक्कर के आसपास लगे गमले भी टूटे हुए हैं।

जबकि यहां ग्रेटर नोएडा शहर में माननीय प्रधानमंत्री जी,मुख्यमंत्री जी एवं नेता व अभिनेताओं लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, हरियाणा, मथुरा एवं अन्य दूर-दराज से लोगों का आवागमन बना रहता है।* उसके बाबजूद भी ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के अधिकारी ध्यान नहीं दे रहे हैं।

# 'एक पेड़ माँ के नाम' के तहत फूलपुर में पौधारोपण अभियान

**फूलपुर ( ब्यूरो )।** केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा सघन वृक्षारोपण अभियान एक पेड़ माँ के नाम के तहत इफको घियानगर फूलपुर में वृहद वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संदीप रॉय, वैज्ञानिक, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, लखनऊ की उपस्थिति में अतिथि गृह के सपीम वृहद वृक्षारोपण हुआ।

कार्यक्रम में संदीप रॉय ने कहा 'एक पेड़ माँ के नाम' एक प्रयास है जो हमारी मातृभूमि और प्रकृति के प्रति हमारे सम्मान और समर्पण को दर्शाता है। इस अभियान का उद्देश्य माँ के नाम पर एक पेड़ लगाना और एक स्थायी स्मृति बनाना है, जो न केवल पर्यावरण की रक्षा करेगा बल्कि एक हरे और अधिक समृद्ध भविष्य के निर्माण में भी योगदान देगा। माँ और प्रकृति दोनों ही जीवन का मूल आधार हैं और इस पहल के माध्यम से हम अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

कार्यक्रम में वरिष्ठ प्रबंधक ई.पी.सी. उमेश कुमार, प्रबंधक ई.पी.सी. मनोज तिवारी, तकनीकी विभाग से सुरेश कुमार सिंह तथा बड़ी संख्या में इफको कर्मचारी उपस्थित रहे।

# बीएचईएल कम्पनी पर धरना जारी

**नोएडा ( चेतना मंच )।** मैसर्स- भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड प्लॉट नंबर- 25, बीएचईएल कंपनी पर कर्मचारियों का धरना आज भी जारी रहा।

धरना प्रदर्शन का नेतृत्व श्रमिक नेता सुरेंद्र, रणजीत सिंह, मनमोहन सागर शालू, बीना आदि ने किया।

**अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आज गौतमबुद्ध नगर के रबूपुरा मंडल अंतर्गत रामोत्सव मैदान में आयोजित योग दिवस कार्यक्रम में योगा करते भाजपा के जिला उपाध्यक्ष सत्येंद्र नागर।**

# वर्चुअल कार्यशाला आयोजित

**ग्रेटर नोएडा ( चेतना मंच )।** भारतीय जनता पार्टी जिला गौतमबुद्धनगर की वर्चुअल माध्यम से आयोजित जिला स्तरीय कार्यशाला बैठक आयोजित की गई क्षेत्रीय उपाध्यक्ष मनोज पोषवाल ने कहा कि 21 जून योग दिवस और जिला कार्यशाला बैठक वर्चुअल

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचारों और बलिदान को जन-जन तक पहुंचाने हेतु आगामी अभियान की रूपरेखा जिला मंडल और बूथ स्तर तक 23 जून डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस से 6 जून उनके जन्मदिवस जयंती तक उनके जीवन के हर पहलू को याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इस अवसर पर भाजपा ज़िलाध्यक्ष अभिषेक शर्मा ने जिला व मंडल अध्यक्षों को संगठनात्मक दिशा-निर्देश दिए सभी कार्यकर्ता से 21 जून योग दिवस और 23 जून डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर गोष्ठी आयोजित कर उनके जीवन चरित्र के विचारों को जन मानस तक पहुँचाने का कार्य करेंगे और 25 जून आपातकाल इमरजेंसी पर टाउनहाल बैठक का आयोजन जिला कार्यालय पर किया जाएगा उन्होंने कहा भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता इस अभियान को जनआंदोलन बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस अवसर पर मुख्य रूप से भाजपा जिला महामंत्री दीपक भारद्वाज धर्मेन्द्र कोरी मनोज गर्ग जिला उपाध्यक्ष सतेन्द्र नागर मीडिया प्रभारी कर्मवीर आर्य गुरु देव भाटी चन्द्रमणि भारद्वाज वरुण धीमान राजीव सिंघल अर्पित तिवारी मनोज भाटी मुकेश चौहान संजय भाटी धीर राणा सुनील कुमार आदि लोग मौजूद रहे।

# सेक्टर-56 आरडब्ल्यूए ने किया योगाभ्यास

**नोएडा ( चेतना मंच )।** आज सेक्टर-56 में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योगाचार्य श्रीमान सीपी सिंह और योगाचार्य श्रीमती कौशल ने सभी साधकों और साधिकाओं को योग कराया और इसके फायदे बताए। सभी ने बहुत उत्साह और श्रद्धा से योग आसन किए और आनंद लिया। जिसमें हमारे सेक्टर-56 आरडब्ल्यूए ने विशेष योगदान दिया।

इस अवसर पर आरडब्ल्यूए अध्यक्ष संजय मावी, जनरल सेक्रेटरी जीके बंसल, ट्रेजरार विक्रम चतुर्वेदी, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट हरीश जुगरण, जेएम सेठ, एसएस सचदेवा, शशि भूषण और तनेजा उपस्थित रहे।

# सेक्टर-11 में सैकड़ों ने किया योगाभ्यास

**नोएडा ( चेतना मंच )।** आज योग दिवस के उपलक्ष पर आरडब्ल्यूए सेक्टर-11 द्वारा आयोजित योग दिवस सुबह 6:30 बजे से 7:00 बजे तक किया गया। जिसमें सेक्टर के करीब 150 लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम में योग गुरु सुनीता रस्तोगी ने योगाभ्यास कराया। इस मौके पर आरडब्ल्यूए अध्यक्ष अनुज गुप्ता, महामंत्री दिनेश कृष्णन समेत सैकड़ों पदाधिकारी मौजूद थे।


**उत्तर मध्य रेलवे**

**ई-निविदा सूचना**

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरि. मण्डल विद्युत अभियन्ता (क0वि0), उत्तर मध्य रेलवे, आगरा द्वारा खुली निविदा निम्न विवरणानुसार आमंत्रित की जाती है।

| | |
|---|---|
| **निविदा संख्या:** AGCTRDT202510 | **अनुमानित लागत:** रु. 32,69,824.5/- |
| **कार्य का नाम:** आगरा डिवीजन में नॉन इंटरलॉक्ड एलसी गेट्स (संख्या 06) के इलेक्ट्रिक लिफ्टिंग बैरियर के साथ इंटरलॉकिंग के संबंध में 220 वी एसी आपूर्ति के लिए सहायक ट्रांसफार्मर का प्रावधान। | |
| **धरोहर राशि:** रु. 65,400/- | **कार्य पूर्ण करने की अवधि:** 09 माह |

1. निविदा पत्र भारतीय रेलवे की वेब साइट (www.ireps.gov.in) पर देखा व भरा जा सकते हैं।
2. निविदा पत्र सिर्फ भारतीय रेलवे की वेब साइट (www.ireps.gov.in) पर दि. 14.07.2025 को 15:30 बजे तक भरा जा सकता है। 1066/25 (ADM)

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR



**दैनिक चेतना मंच**

भगवान हनुमान बजरंग बली के अवतार श्री बालाजी ( मेंहदीपुर ) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में समर्पित है।

डाक पंजी. सं. L-10/GBD-574/99

RNI No. 69950/98

स्वामी मुद्रक प्रकाशक रामपाल सिंह रघुवंशी ने M/s Sai Printing Press, डी-85 सेक्टर-6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर ( यू पी. ) से छपवाकर, ए-131 सेक्टर-83, नोएडा से प्रकाशित किया।

संपादक-रामपाल सिंह रघुवंशी

Contact: 0120-2518100, 4576372, 2518200

Mo.: 9811735566, 8750322340

E-mail: chetnamanch.pr@gmail.com raghuvanshirampal365@gmail.com raghuvanshi_rampal@yahoo.co.in

www.chetnamanch.com

आज अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सेक्टर-110 स्थित लोटस वुलेवर्डस सोसायटी में सोसायटीवासियों ने पूरे उत्साह के साथ योगासन किया।

# योग के बिना कोई भी योग्य नहीं : जैन

**नोएडा (चेतना मंच)।** अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर उत्तर प्रदेश युवा व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष विकास जैन ने कहा कि योग जीवन का आधार है। योग के बिना कोई भी योग्य नहीं है। जब तक शरीर स्वस्थ नहीं होगा तब तक किसी भी कार्य में मन नहीं लगेगा।

नोएडा स्टेडियम में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर पत्रकारों से बात करते हुए विकास जैन ने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयास से आज पूरे विश्व में योग दिवस मनाया जाता है। प्रदेश अध्यक्ष विकास जैन ने देश के प्रधानमंत्री से माँग की प्रति सप्ताह रविवार को सामूहिक योगा का नियम बनाए जिससे आम जनमानस योगा के प्रति आकर्षित हो सके और निरोगी रह सके।

प्रदेश महामंत्री सचिन गोयल ने महानगर अध्यक्ष महेश चौहान का आभार व्यक्त किया जिन्होंने इस कार्यक्रम में आने के लिए हमें निमंत्रण दिया। आज उत्तर प्रदेश युवा व्यापार मंडल के प्रदेश चेयरमैन नवनीत गुप्ता प्रदेश अध्यक्ष विकास जैन प्रदेश उपाध्यक्ष निखिल अग्रवाल प्रवीन गर्ग प्रदेश महामंत्री सचिन गोयल प्रदेश कोषाध्यक्ष अंकुर बंसल ने उद्योग प्रकोष्ठ से अध्यक्ष शक्तिसिंह प्रदेश सचिव शिवा चौहान अमित गोयल मनीष शर्मा क्रॉकरी एसोसिएशन से अध्यक्ष राजेश जिंदल मेडिकल एसोसिएशन से अध्यक्ष अमित गुप्ता व अन्य अनेक व्यापारी सम्मिलित हुए।

## पड़ोसी का लड़का भगा ले गया लड़की

**ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)।** थाना दादरी क्षेत्र के प्रताप विहार से एक 14 वर्षीय किशोरी संदिग्ध परिस्थितियों में घर से लापता हो गई। किशोरी के पिता ने पड़ोस में रहने वाले युवक पर अपनी बेटी को बहला फुसलाकर भगा ले जाने का शक जताते हुए मुकदमा दर्ज कराया है।

प्रताप विहार में रहने वाले मनोज (काल्पनिक नाम) ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि 16 जून की मध्य रात्रि को उनकी 14 वर्षीय बेटी घर से संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। उन्होंने जब अपनी बेटी की खोजबीन की तो पता चला कि पड़ोस में रहने वाला बॉबी नाम का युवक भी घर से गायब है।

बॉबी के परिजनों से जब उसके बारे में पूछताछ की गई तो उन्होंने बताया कि वह खाटू श्याम गया है। मनोज के मुताबिक उसे पूरा शक है कि उनके नाबालिक बेटी को बॉबी ही भगाकर ले गया है। पुलिस का कहना है कि पीड़ित की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और लापता किशोरी तथा आरोपी युवक की तलाश की जा रही है।

## मंदिर की पार्किंग में खड़ी कार का शीशा तोड़ा

**ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)।** थाना सूरजपुर क्षेत्र के नवादा गांव के पास स्थित मंदिर में दर्शन करने आए एक व्यक्ति की कार का शीशा तोड़कर चोरों ने लैपटॉप, पर्स व अन्य सामान चोरी कर लिया। पीड़ित ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है ।

ग्रैंड फोर्ट सोसायटी सिग्मा 4 निवासी आशीष सिद्धू ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि वह 10 जून के रात्रि को नवादा गांव के पास बने मंदिर में दर्शन करने के लिए गया था। उसने अपनी कार मंदिर की पार्किंग में खड़ी की थी। मंदिर से दर्शन करने के बाद जब वह वापस अपनी कार के पास आया तो उसकी पिछली खिड़की का शीशा टूटा हुआ था। चोरों ने शीशा तोड़कर कार में रखा लैपटॉप, चार्जर,पर्स, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, सैमसंग स्मार्टवॉच, रियलमी के इयरबड्स तथा ऑफिस की चाबी चोरी कर ली थी।

पीड़ित के मुताबिक पर्स में 3000 रूपये रखे हुए थे। उसने इसकी सूचना तुरंत पुलिस को दी थाना सूरजपुर पुलिस का कहना है कि पीड़ित के शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच की जा रही है।

## मकान पर लगे टॉवर से आरआरयू चोरी

**नोएडा (चेतना मंच)।** थाना सेक्टर-49 क्षेत्र के होशियापुर गांव में मकान पर लगे मोबाइल टावर से चोरों ने आर आर यू चोरी कर लिया कंपनी के टेक्नीशियन की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

राजू कश्यप ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि वह एस जी एनकौन प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में टेक्नीशियन के पद पर कार्यरत है। उनकी कंपनी इंडस टावर के मोबाइल टावरों की देखरेख का कार्य करती है। 8 जून को एयरटेल इंजीनियर ने कॉल कर बताएं कि साइट पर सिग्नल नहीं आ रहे हैं। इस सूचना के बाद है होशियापुर गांव में संजय शर्मा के मकान पर लगे टावर पर जांच करने के लिए पहुंचे। जांच के दौरान पता चला कि अज्ञात चोरों ने टावर में लगा आरआरयू चोरी कर लिया है। उसने इसकी सूचना तुरंत कंपनी के अधिकारियों व सिक्योरिटी टीम को दी। थाना प्रभारी ने बताया कि टेक्नीशियन की शिकायत पर चोरी का मामला दर्ज कर लिया गया है।

आज अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सेक्टर-100 नोएडा में योग करते सपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व जिला पंचायत सदस्य सुभाष भाटी (सलारपुर)।

## केडब्ल्यू दिल्ली -6 मॉल ने हजारों लोगों की मौजूदगी में मनाया योग दिवस

गाजियाबाद। केडब्ल्यू ग्रुप ने गाजियाबाद विकास मंच के साथ मिलकर राज नगर एक्सटेंशन गाजियाबाद में अपने प्रमुख मॉल केडब्ल्यू दिल्ली-6 में एक मेगा कार्यक्रम आयोजित करके अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए 1000 से अधिक प्रतिभागियों ने एक साथ भाग लिया। केडब्ल्यू दिल्ली-6 मॉल के जीवंत वातावरण में आयोजित इस कार्यक्रम में योग के प्राचीन अभ्यास के माध्यम से स्वास्थ्य और ध्यान के प्रति समुदाय के समर्पण को दर्शाया गया।

मयंक गोयल भाजपा अध्यक्ष गाजियाबाद डॉ अनिल अग्रवाल पूर्व राज्यसभा सदस्य पंडित वैभव शर्मा मरघट हनुमान मंदिर के प्रमुख गणमान्य व्यक्ति थे जिन्होंने इस कार्यक्रम में भाग लिया। पंकज कुमार जैन निदेशक केडब्ल्यू ग्रुप ने कहा कि यह कार्यक्रम केवल योग के बारे में नहीं है; यह हमारे समुदाय को स्वास्थ्य और ध्यान के प्रति साझा प्रतिबद्धता में एक साथ लाने के बारे में है।

## पृष्ठ एक के शेष....

**दुनिया के लिए योग.....**

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज की दुनिया में ऐसा समर्थन सामान्य घटना नहीं है. ये सिर्फ एक प्रस्ताव का समर्थन भर नहीं था, ये मानवता के भले के लिए दुनिया का सामूहिक प्रयास था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि दुर्भाग्य से आज पूरी दुनिया किसी न किसी तनाव से गुजर रही है. कितने ही क्षेत्रों में अशांति और अस्थिरता बढ़ रही है। ऐसे में योग से हमें शांति की दिशा मिलती है। योग एक ऐसा पॉज बटन है, जिसकी मानवता को संतुलन की सांस लेने और फिर से नियंत्रण पाने की जरूरत है। आइए इस योग दिवस को मानवता के लिए ओम को खोजने के लिए योग की शुरुआत के रूप में चिह्नित करें, जहां आंतरिक शांति समग्र शांति का मार्ग बन जाती है।

उन्होंने आगे कहा कि आज 11 साल बाद हम देख रहे हैं कि योग दुनिया भर में करोड़ों लोगों की जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है. मुझे गर्व होता है, जब मैं देखता हूं कि हमारे दिव्यांग साथी योग शास्त्र पढ़ते हैं। वैज्ञानिक अंतरिक्ष में योग करते हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया में योग के प्रसार के लिए भारत योग के साइंस को आधुनिक रिसर्च से और ज्यादा सशक्त कर रहा है. देश के बड़े-बड़े मेडिकल संस्थान योग पर रिसर्च पर जुटे हैं. योग की वैज्ञानिकता को आधुनिक चिकित्सा पद्धति में स्थान मिले, ये हमारा प्रयास है।

उन्होंने आगे कहा कि आइए, हम सब मिलकर योग को एक जन आंदोलन बनाएं. एक ऐसा आंदोलन, जो विश्व को शांति, स्वास्थ्य और समरसता की ओर ले जाए। जहां हर व्यक्ति दिन की शुरुआत योग से करे और जीवन में संतुलन पाए. जहां हर समाज योग से जुड़े और तनाव से मुक्त हो। जहां योग मानवता को एक सूत्र में पिरोने का माध्यम बने और जहां 'Yoga For One Earth, One Health% एक वैश्विक संकल्प बन जाए।

**योग से शरीर और मन....**

सशक्त भारत' के निर्माण के लिए नियमित रूप से योग करने व अन्य लोगों को भी योग के प्रति जागरूक करने का संकल्प लें।'

दुनिया योग की शक्ति को मानती है। विश्व योग को वैश्विक भलाई के लिए एक शक्तिशाली एजेंट के रूप में देखता है। यह लोगों को अतीत के बोझ को ढोए बिना वर्तमान में जीने में मदद करता है। योग समाज में सकारात्मक बदलाव के नए तरीके बना रहा है। योग आज लोगों के सामने आने वाली कई समस्याओं का समाधान प्रदान करता है। यह योग केवल ज्ञान ही नहीं बल्कि विज्ञान भी है।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि सूचना क्रांति के इस युग में सूचना स्त्रोतों की बाढ़ आ गई है और मानव मन के लिए एक विषय पर ध्यान केंद्रित करना एक चुनौती है। इसका समाधान भी योग में है क्योंकि यह मन को केंद्रित करने में मदद करता है। योग आजीविका का साधन बन गया है। सेना से लेकर खेल जगत तक योग को अपनी दिनचर्या में शामिल कर लिया है

## बिजली तारों की चोरी किसानों के लिए घातक है : बिजेंद्र सिंह

**गाजियाबाद (ब्यूरो)।** भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) ने मोदीनगर तहसील परिसर में भाकियू की मासिक पंचायत का आयोजन हुआ। भाकियू के राष्ट्रीय सचिव ओमपाल सिंह, प्रदेश उपाध्यक्ष रामकुमार चौधरी , जिला अध्यक्ष बिजेंद्र सिंह,जिला प्रभारी जयकुमार मलिक, कोषाध्यक्ष पवन चौधरी (दुहाई),युवा जिला अध्यक्ष छोटे चौधरी के नेतृत्व में जिले के सैकड़ों भाकियू पदाधिकारी और किसान पंचायत में शामिल हुए। और क्षेत्रीय किसानों की समस्याओं पर गंभीरता से चर्चा की गई। मासिक पंचायत में क्षेत्र के किसानों को एकजुट रहने का आव्हान किया गया।जिला अध्यक्ष बिजेंद्र सिंह ने कहा कि किसान एकजुट रहें, एकता ही संगठन की और हमारी सबसे बड़ी ताकत है।किसान एकता बनाए रखें। और अपने संगठन को मजबूत करने का काम करें । उन्होंने संगठन मजबूत करने के लिए आवाह्नन किया और ब्लॉकों और गांव गांव में कमेटी बनाने की जिम्मेदारी,संजीव चौधरी, मुस्तफा ,पवन चौधरी और यशवीर सिंह को सौंपी गई ।भाकियू की मासिक पंचायत में भाकियू के प्रदेश उपाध्यक्ष रामकुमार चौधरी, जिला अध्यक्ष बिजेंद्र सिंह,जिला उपाध्यक्ष यशवीर सिंह,पवन चौधरी,संजीव चौधरी,छोटे चौधरी ने किसानों की समस्याओं पर चर्चा की।उन्होंने किसानों को जागरूक करते हुए कहा कि जमीन किसान की आत्मा है,जमीन के बिना किसान जिंदा नहीं रहेगा। उसकी फसलों को बचाने का काम करें प्रशासन।किसान फसलों की सिंचाई के लिए जद्दोजहद कर रहा है।कहीं रजवाहे में पानी नहीं तो कहीं बिजली के खम्बो से तार चोरी हो रहे है।जिसको लेकर किसानों में आक्रोश है। रामकुमार चौधरी ने कहा कि किसानों का उत्पीड़न करें अधिकारी उनकी समस्याओं को तत्काल निपटाएं। युवा जिला अध्यक्ष छोटे चौधरी ने कहा कि पीड़ति किसान की समस्या प्रशासन प्राथमिकता पर निस्तारित करे और किसान की फसलों के लिए बड़ा नुकसान बिजली के तार चोरी हो रहे, बिजली व्यवस्था दुरुस्त कराएं। और मिल मालिकों से गन्ने का बकाया भुगतान ब्याज सहित दिलाया जाए।

मासिक पंचायत के उपरांत संपूर्ण समाधान दिवस में किसानों की समस्याओं को लेकर अपर आयुक्त अमित सिंह और एडीएम प्रशासन रणविजय सिंह को एसडीएम मोदीनगर निखिल चक्रवर्ती और तहसीलदार रजत की मौजूदगी में आठ सूत्रीय ज्ञापन सौंपा ।

भाकियू जिला अध्यक्ष बिजेंद्र सिंह ने बताया कि किसानों की प्रमुख आठ प्रमुख समस्याओं से जिला प्रशासन को अवगत कराया गया।जिनमें मुख्य रूप से मिल से गन्ने का बकाया भुगतान,बिजली समस्या और चोरों के जरिए किसानों के ट्यूबवेल से मोटर,स्टार्टर चोरी हो रहे है, आवारा पशुओं से किसानों की फसलों का बचाव आदि सात समस्याओं से मोदीनगर तहसील में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में जिला प्रशासन को ज्ञापन देकर अवगत कराया गया ।

## खास खबर

### हर्निया के लिए सूर्यकुमार की हो सकती है सर्जरी

**मुम्बई ।** भारतीय टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव आजकल स्पोर्ट्स हर्निया के इलाज के लिए इंग्लैंड गये हुए हैं। सूर्यकुमार वहां विशेषज्ञ डॉक्टरों से सलाह के बाद सर्जरी भी करा सकते हैं। सूर्यकुमार यादव पिछले तीन महीने से स्पोर्ट्स हर्निया की समस्या से जूझ रहे थे। आईपीएल में लगातार यात्रा के चलते उनका दर्द काफी ज्यादा बढ़ गया था। एक रिपोर्ट के अनुसार वह पेट के निचले हिस्से में दाहिनी तरफ स्पोर्ट्स हर्निया से पीड़ित हैं। वहीं सूर्या की इस बीमारी को लेकर बीसीसीआई की ओर से कहा गया है कि टीम को अभी अगले 2 महीने तक कोई टी20 मैच या सीरीज नहीं खेलनी है। ऐसे में सूर्यकुमार के पास इलाज कराने के लिए ये सही समय है। इससे उन्हें बेंगलुरु के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में रिहैब के बाद पूरी तरह से फिट होने के लिए पर्याप्त समय भी मिल जाएगा। सूर्यकुमार ने हाल ही में समाप्त हुए आईपीएल 2025 में शानदार प्रदर्शन किया था। उन्होंने आईपीएल में 700 से ज्यादा रन बनाये थे।

### राफेल नडाल को मिली मार्क्विस की उपाधि

**मैड्रिड।** टेनिस के महान खिलाड़ी राफेल नडाल को स्पेन के राजा फेलिपे श्कने गुरुवार को मार्क्विस की उपाधि से सम्मानित किया है। यह सम्मान उन्हें खेल के क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान और देश के लिए गौरव बढ़ाने के लिए दिया गया है। राजमहल की ओर से जारी एक आधिकारिक बयान में कहा गया, श्वे (सम्मानित व्यक्ति) स्पेन के लिए गर्व का कारण हैं और उन मूल्यों के प्रतीक हैं जो समाज को प्रेरणा दे सकते हैं। 22 बार के ग्रैंड स्लैम विजेता नडाल ने पिछले वर्ष पेशेवर टेनिस से संन्यास लिया था। उन्हें यह उपाधि राजा फेलिपे श्क के शासनकाल की 10वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में दी गई, जिसमें छह विशिष्ट व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। अन्य जिन हस्तियों को उपाधियां दी गईं, उनमें प्रसिद्ध पॉप-रॉक गायिका लूज कासाल और पैरालंपिक तैराक टेरेसा पेरालेस शामिल हैं। नडाल को अब उनके गृह द्वीप मायोर्का के नाम पर 'मार्क्विस ऑफ ल्लेवान्त डी मायोर्का' की उपाधि प्राप्त हुई है। यह एक वंशानुगत उपाधि होगी, जिसे उनके वंशज आगे प्राप्त कर सकेंगे।

### करुण और जितेश विदर्भ टीम छोड़ेंगे

**नई दिल्ली ।** करुण नायर और जितेश शर्मा रणजी ट्रॉफी के अगले सत्र में विदर्भ की जगह किसी और टीम से खेलते नजर आ सकते हैं। अगर ऐसा होता है तो ये विदर्भ की टीम के लिए करारा झटका होगा। एक रिपोर्ट के अनुसार करुण और जितेश ने विदर्भ से अलग होना तय किया है। जितेश जहां बड़ौदा जा रहे हैं। वहीं कृष्णा कर्नाटक से खेलने की योजना बना रहे हैं। पिछले सीजन में विदर्भ की जीत में इन दोनो की अहम भूमिका थी, ऐसे में इनका जाना टीम के लिए नुकसानदेह रहेगा। विदर्भ की टीम रणजी ट्रॉफी में चैंपियन, विजय हजारे ट्रॉफी में उपविजेता और 2024-25 टूर्नामेंट में सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी (एसएमएटी) में क्वार्टर तक पहुंची थी। करुण ने अबतक रणजी ट्रॉफी में 863 रन जबकि विजय हजारे ट्रॉफी में 779 रन बनाये हैं। उन्होंने 2023-24 सत्र से पहले अपने गृह राज्य को छोड़ दिया था पर अब वह व्यक्तिगत और पारिवारिक कारणों से कर्नाटक लौट रहे हैं।

# इंटर मियामी ने पोर्टो को 2-1 से हराया

**फीफा क्लब वर्ल्ड कप**

एजेंसी

**नई दिल्ली।** फीफा क्लब वर्ल्ड कप में गुरुवार को खेले गए मुकाबले में लियोनेल मेसी की ट्रेड मार्क फ्री-किक की बदौलत इंटर मियामी ने पुर्तगाली क्लब पोर्टो के खिलाफ 2-1 से रोमांचक जीत दर्ज की। इस जीत के साथ ही एमएलएस क्लब इंटर मियामी ने ग्रुप-ए से अगले दौर में पहुंचने की अपनी उम्मीदों को मजबूत कर लिया है। पहले हाफ में सैमू आगहेहोवा के पेनल्टी गोल से पोर्टो को शुरूआती बढ़त मिली, लेकिन दूसरे हाफ में इंटर मियामी ने जोरदार वापसी की। पहले टेलास्को सेगोविया ने बराबरी का गोल दागा और फिर 54वें मिनट में मेसी ने एक शानदार फ्री-किक के जरिए अपनी टीम को जीत दिलाई। मैच की शुरूआत में पोर्टो ने आक्रामक खेल दिखाया और 8वें मिनट में उन्हें पेनल्टी मिली, जिसे वीएआर समीक्षा के बाद मंजूरी दी गई। इंटर मियामी के डिफेंडर नोआ एलेन द्वारा जोआओ मारियो को बॉक्स में हल्का सा टच करने पर रेफरी ने पेनल्टी दी। स्पेनिश खिलाड़ी सैमू आगहेहोवा ने गोलकीपर ऑस्कर उस्तारी को छकाकर अपनी टीम को बढ़त दिला दी, हालांकि उस्तारी ने गेंद को हाथ लगाया लेकिन रोक नहीं सके। लियोनेल मेसी ने शुरूआत से ही रचनात्मक भूमिका निभाई। उन्होंने अनुभवी स्ट्राइकर लुइस सुआरेज को एक शानदार गेंद थ्रू की, लेकिन सुआरेज ऑफसाइड थे और गोलकीपर क्लाउडियो रामोस ने भी अच्छा बचाव किया।पहले हाफ के अंत तक पोर्टो का दबाव बना रहा। आगहेहोवा और वरेला ने गोल के कई मौके बनाए, लेकिन गोलपोस्ट और गोलकीपर उस्तारी की सतर्कता के चलते मियामी ने और गोल नहीं खाने दिए.द्वसरे हाफ की शुरूआत से ही इंटर मियामी ने आक्रामक खेल दिखाया। 47वें मिनट में मासेली वाइगांट के क्रॉस पर टेलास्को सेगोविया ने शानदार फिनिशिंग करते हुए स्कोर 1-1 कर दिया।

इसके कुछ ही मिनटों बाद 54वें मिनट में मेसी को बॉक्स के बाहर फाउल किया गया। इसके बाद उन्होंने खुद फ्री-किक ली और अपने चिर-परिचित अंदाज में गेंद को टॉप राइट कॉर्नर में डालकर इंटर मियामी को 2-1 की बढ़त दिलाई। अंतिम मिनटों में पोर्टो ने बराबरी के लिए पूरी ताकत झोंक दी।

## इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में अच्छा प्रदर्शन करेंगे यशस्वी : रहाणे

एजेंसी

**मुंबई ।** अनुभवी बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे ने कहा है कि यशस्वी जायसवाल जानते हैं कि सलामी बल्लेबाज की भूमिका किस प्रकार निभाई जाती है। ऐसे में वह इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। रहाणे ने कहा कि डेब्यू के बाद से ही इस युवा बल्लेबाज ने अपने को साबित किया है। रहाणे ने कहा, ह्यव्यक्तिगत रूप से मैं यशस्वी को अच्छा प्रदर्शन करते हुए देखने के लिए उत्सुक हूं क्योंकि इंग्लैंड में पारी की शुरूआत करना कठिन होता है। उन्होंने कहा, ह्यउसके पास अच्छा कौशल है। वह एक छोर पर विकेट बचाकर रख सकता है और जरूरत पड़ने पर आक्रामक बल्लेबाजी भी कर सकता है। इसलिए मैं इंग्लैंड में उसके प्रदर्शन को देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं। रहाणे ने भारत की तरफ से अपना आखिरी मैच दो साल पहले वेस्टइंडीज के खिलाफ खेला था, जबकि यशस्वी जुलाई 2023 में वेस्टइंडीज में टेस्ट क्रिकेट में शानदार पदार्पण करने के बाद से टीम के पहली पसंद के सलामी बल्लेबाज रहे हैं। रहाणे ने कहा, ह्यमैं तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज और जसप्रीत बुमराह को भी अच्छा प्रदर्शन करते देखना चाहता हूं, क्योंकि सीनियर खिलाड़ी होने के कारण उन पर गेंदबाजी आक्रमण की जिम्मेदारी रहेगी। उन्होंने कहा, ह्यहम सभी जानते हैं कि बुमराह कितने बेहतरीन गेंदबाज हैं और विकेट लेने में वह किसी से पीछे नहीं है।

# सूर्या आनंद ने चार विकेट लेकर मदुरै पैंथर्स को दिलायी जीत

एजेंसी

**चेन्नई ।** सूर्या आनंद की शानदार गेंदबाजी से तमिलनाडु पीमियर लीग क्रिकेट (टीएनपीएल) 2025 में सिचम मदुरै पैंथर्स ने नेल्लई रॉयल किंग्स को 10 रनों से हरा दिया। इस मैच में एक समय रॉयल किंग्स की जीत तय नजर आ रही थी क्योंकि उसे 12 गेंदों में जीत के लिए11 रन चाहिए थे और उसे 4 विकेट शेष थे पर सूर्या के ओवर में मैच पलट गया और मदुरै ने सभी को हैरान करते हुए जीत दर्ज की। सूर्या ने इस ओवर में पांच गेंदों पर बचे हुए चार विकेट ले लिए। इस प्रकरा नेल्लई रॉयल किंग्स जीत के करीब पहुंचकर भी उसे हासिल नहीं कर पायी जबकि उसे 12 गेंदों में सिर्फ 11 रन चाहिए थे पर वह हार गयी। यह रिकार्ड टीएनपीएल के इतिहास में दर्ज हुआ है। इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए मदुरै पैंथर्स ने 168 रन बनाए। बलचंदर अनिरुद्ध और अतीक उर रहमान ने 48 और 36 रन बनाए। दूसरी ओर नेल्लई रॉयल किंग्स के कप्तान अरुण कार्तिक ने 67 रन बनाए पर उनकी टीम हार गई। वहीं सूर्या आनंद ने शानदार गेंदबाजी कर अपनी टीम को जीत दिलाई। सूर्या को इस मैच में अपनी जबरदस्त गेंदबाजी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड मिला। वह पैंथर्स के नए हीरो हैं। उन्होंने 23 गेंदों में कुल 4 विकेट लिए और सिर्फ 24 रन दिए। उसने सभी विकेट 19वें ओवर में 5 गेंदों के अंदर लिए। इस ओवर की पहली ही गेंद पर सूर्या ने विकेट लिया। इसके बाद दूसरे गेंद वह खेल नहीं पाये जबकि अगली तीन गेंदों पर उसे विकेट मिले। मदुरै पैंथर्स को इस जीत से अंक तालिका में लाभ हुआ है और वह चार अंकों के साथ छठे स्थान पर पहुंच गयी है।

# भारतीय टीम टेस्ट सीरीज 3-1 से जीतेगी : तेंदुलकर

एजेंसी

**मुम्बई ।** भारत और इंग्लैंड के बीच टेस्ट सीरीज कौन सी टीम जीतेगी। इसको लेकर दिग्गजों की दावेदारी जारी है। इसी बीच महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने कहा है कि भारतीय टीम ये सीरीज 3-1 से जीतेगी। इससे पहले भारतीय टीम ने ये सीरीज साल 2007 में जीती थी। ऐसे में अब अगर शुभमन गिल ऐसा करने में सफल रहते हैं तो वह अजीत वाडेकर, कपिल देव और राहुल द्रविड़ के बाद इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज जीतने वाले चौथे भारतीय कप्तान होंगे। तेंदुलकर से जब सीरीज के परिणाम को लेकर पूछा गया तो उन्होंने कहा, मुझे 3-1 से भारतीय टीम की जीत का भरोसा है। साथ कहा कि नये कप्तान शुभमन गिल इस दौरे पर कुछ विशेष हासिल करेंगे। सचिन ने शुभमन की कि वह इस बात पर ध्यान न दें कि कौन क्या कह रहा है क्योंकि अलग-अलग लोगों की राय भी अलग होगी। उन्हें अपने अनुसार काम करना चाहिये। उनकी कप्तानी चाहे आक्रामक हो या रक्षात्मक उसको लेकर सभी के अपने विचार होंगे। वहीं मुझे लगता है कि उन्हें इस बारे में सोचने की जरूरत है कि ड्रेसिंग रूम में क्या चर्चा हुई थी और जो योजना वे बना रहे होते हैं, तो क्या उसके अनुसार काम चल रहा है या नहीं। इसके अलावा क्या सही फैसला टीम हित में लिया जा रहा है, इसी का ध्यान वे रखेंगे।

## भारतीय टीम अपनी क्षमताओं पर भरोसा रखे : किरमानी

एजेंसी

**नई दिल्ली ।** भारतीय टीम के पूर्व विकेटकीपर सैयद किरमानी ने कहा है कि शुभमन गिल की कप्तानी वाली टीम को इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में अपने पर भरोसा रखने और साल 2020-21 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ऐतिहासिक बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में मिली जीत से प्रेरणा लेते हुए बेहतर प्रदर्शन करना चाहिये। किरमानी ने कहा, हमारी 1983 विश्वकप की जीत भी उनके लिए प्रेरणा बने। साथ ही कहा कि टीम के लिए सबसे जरुरी बात अपने पर भरोसा रखना है। साथ ही कहा कि टीम में कई प्रतिभाशाली युवा हैं और ये काफी सक्षम टीम है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जब हमने 2020-21 सीरीज में ऑस्ट्रेलिया को हराया था, तो पहले टेस्ट के बाद विराट कोहली भी टीम में नहीं थे। साथ ही कहा कि इंग्लैंड के हालातों में सबसे अनुभवी क्रिकेटरों की भी परीक्षा होती है, ऐसे में देखना होगा कि शुभमन गिल किस प्रकार नेतृत्व करते हैं। उन्होंने कहा, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि विराट कोहली और रोहित शर्मा दोनों ही टीम के आदर्श थे और रातों-रात उनकी जगह लेना संभव नहीं है। वह भी तब जबकि पहले दौरे पर अंग्रेजी हालातों में ढलना कठिन होता है। उन्होंने कहा कि इस टीम में केएल राहुल , जसप्रीत बुमराह सहित इंग्लैंड के खिलाफ खेलने का अनुभव रखने वाले कुछ अन्या खिलाड़ी भी हैं जो अन्य युवाओं को राह दिखा सकते हैं।

### मेसी के गोल से इंटर मियामी जीती

**अटलांटा ।** लियोनेल मेसी के गोल से इंटर मियामी ने क्लब विश्व कप फुटबॉल टूनामेंट में यूरोपीय चैंपियन पोर्टो को 2-1 से हरा दिया। इस मैच में मेसी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए फ्री किक पर गोल किया। वहीं पोर्टो क्लब को वीडियो समीक्षा प्रणाली के जरिए शुरू में ही पेनल्टी किक मिली जिसपर सामू ओमोरोदियन ने गोल कर अपनी टीम को बढ़त दिलायी किया। इससे इस मैच में इंटर मियामी की टीम हाफ टाइम तक 1-0 से पीछे थी पर टेलास्को सेगोविया ने दूसरे हाफ के दो मिनट बाद मासेली वीगन्डट के बनाये एक मूव पर गोल करके स्कोर 1-1 से बराबरी पर ला दिया। इसके बाद मेसी ने फ्री किक पर एक गोल दागकर अपनी टीम कीम को 2-1 से बढ़त दिला दी। ये बढ़त अंत तक कायम रही।

# टेस्ट सीरीज जीतना आईपीएल से अधिक महत्वपूर्व : शुभमन

एजेंसी

**लीड्स ।** भारतीय क्रिकेट टीम के नये कप्तान शुभमन गिल ने इंग्लैंड के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट मैच से पहले कहा कि टेस्ट सीरीज जीतना आईपीएल खिताब जीतने से कहीं बड़ी उपलब्धि है। इसलिए उनके टीम का लक्ष्य अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए जीत हासिल करना है। उन्होंने कहा, ह्यटेस्ट सीरीज में जीत के लिए अधिक अवसर नहीं मिलते हैं क्योंकि अधिक दौरे नहीं होते हैं। वहीं आईपीएल हर साल होता है और जीत हासिल करने का अवसर रहता है , इसलिए टेस्ट सीरीज सबसे महित्वपूर्व है और वह भी इइंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका में हो तो उससे बड़ा कुछ नहीं हो सकता। उन्हें इंग्लैंड में लाल गेंद से खेलने का अनुभवी अधिक नहीं है पर वह चिन्तित नहीं हैं। उन्होंने कहा, ह्यकई लोग कहते हैं कि आपकी टीम के पास उतना अनुभव नहीं है पर अच्छी बात यह है कि हम पर अपेक्षाओं का उतना बोझ नहीं होगा क्योंकि अधिकांश खिलाड़ी इंग्लैंड में खेले नहीं है। इससे वह निडर होकर खेलेंगे । गिल ने कहा, ह्यपिछले पांच से दस साल में हमारे सीनियर्स से हमें जो हासिल हुआ है वह यही है कि हम कहीं भी जीत सकते हैं। हम उसी आत्मविश्वास के साथ खेलने का प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि उनका और मुख्य कोच गौतम गंभीर का मानना है कि कोहली के संन्यास के बाद उन्हें ही चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करनी चाहिए। कप्तान ने कहा है कि वह सुरक्षा का माहौल बनाना चाहते हैं जिससे खिलाड़ी बिना किसी दबाव के अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें। उन्होंने कहा, ह्यअगर हम ऐसा करने में सफल रहे तो टेस्ट सीरीजऔर डब्ल्यूटीसी चक्र में हम सफल रहेंगे। उन्होंने का कि खिलाड़ियों से सीधे संवाद की जरूरत है कि जिससे पता चले कि क्या चाहते हैं । उन्हें अपना स्वाभाविक खेल दिखाने की आजादी मिलनी चाहिए। गिल ने यह भी कहा कि आईपीएल के दौरान उन्होंने इंग्लैंड दौरे की तैयारी के लिए विराट और रोहित से सलाह ली थी। उन्होंने कहा, ह्यमैं आईपीएल के दौरान दोनों से मिला और उन्होंने इंग्लैंड के अपने अनुभवों के बारे में बताया था।

**अंडर-15 राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता**

# झारखंड कुश्ती के 13 सदस्यीय टीम नागपुर रवाना

एजेंसी

**रांची ।** अंडर-15 राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता जिसका आयोजन 20 से 22 जून 2025 तक नागपुर,महाराष्ट्र में आयोजित हो रहा है, उक्त प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए झारखंड कुश्ती के 13 सदस्यी टीम, जिसमें 10 बालक (ग्रीको-रोमन) एवं 3 प्रशिक्षक नागपुर महाराष्ट्र के लिए रवाना हुए। उक्त प्रतियोगिता के लिए टीम रवाना होने से पहले झारखंड खेल विभाग के सहयोग द्वारा खिलाड़ियों को ट्रैक सूट,खेल किट देकर ,झारखंड व-15 ग्रीको-रोमन कुश्ती टीम को रवाना किया गया। झारखंड के पहलवानो को राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में उम्दा प्रदर्शन करने के लिए, झारखंड राज्य कुश्ती संघ के अध्यक्ष-जीशान कमर, (भा.प्र.से.), अभिभावक-के रवि कुमार, (भा.प्र.से.),हमारे मार्गदर्शक-भोलानाथ सिंह, महासचिव-रजनीश कुमार , राजीव रंजन भीम, खेल विभाग झारखंड के पदाधिकारीयों, सभी जिला कुश्ती अध्यक्ष/ सचिव एवं झारखंड राज्य कुश्ती परिवार के द्वारा शुभकामनाएं दी गई।

# यशस्वी है भविष्य का सितारा : गिलक्रिस्ट

एजेंसी

**सिडनी ।** ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज विकेटकीपर रहे एडम गिलक्रिस्ट ने भारतीय टीम के युवा बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल की जमकर प्रशंसा करते हुए हुए भविष्य का सितारा बताया है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पर्थ टेस्ट में यशस्वी के शतक और मिचेल स्टार्क के साथ उनकी झड़प को लेकर गिलक्रिस्ट ने कहा कि इस प्रकार की बातें होती रहती हैं।

वह घटना बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के पहले टेस्ट की थी थी। जिसमें यशस्वी ने स्टार्क की गेंद पर चौका लगाकर उनपर टिप्पणी कर दी थी, तुम बहुत धीमी गेंद फेंक रहे। उस टेस्ट में दोनों के बीच हल्की-फुल्की बहस हुई थी। यशस्वी ने उस पारी में शतक लगाया था। वहीं अगले ही टेस्ट में स्टार्क ने जायसवाल को शून्य पर ही पेवेलियन भेजे दिया था। गिलक्रिस्ट ने पर्थ टेस्ट और यशस्वी को लेकर कहा कहा, यह उसका (जायसवाल) दिन था। यशस्वी ने ऑस्ट्रेलिया की तेज और उछाल भरी पिचों पर शानदार प्रदर्शन किया था। वह भारत की ओर से सीरीज में सबसे अधिक रन बनान वाले खिलाड़ी रहे थे। उन्होंने 5 टेस्ट मैच की सीरीज में 391 रन बनाए थे। इस दौरान उन्होंने पर्थ में 161 रन की शानदार शतकीय पारी खेली थी। सीरीज में 2 अर्धशतक भी उनके नाम थे। यशस्वी पिछले 4 सीरीज में 3 बार भारत के लिए शीर्ष स्कोरर रहे हैं।

# मार्नस लाबुशेन वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टेस्ट से बाहर

- स्टीव स्मिथ भी चोट के चलते नहीं खेलेंगे
- सैम कॉन्सटास और जोश इंगलिस को टीम में किया गया शामिल
- टेस्ट की अंतिम एकादश और बल्लेबाजी क्रम की घोषणा मैच के करीब की जाएगी

एजेंसी

**मेलबर्न।** ऑस्ट्रेलिया को 25 जून से बारबाडोस में शुरू होने वाले पहले टेस्ट से पहले बड़ा झटका लगा है। स्टार बल्लेबाज मार्नस लाबुशेन को टीम से बाहर कर दिया गया है जबकि अनुभवी स्टीव स्मिथ चोट के कारण उपलब्ध नहीं रहेंगे। उनकी जगह सैम कॉन्सटास और जोश इंगलिस को टीम में शामिल किया गया है। यह दोनों बदलाव पहले टेस्ट से पांच दिन पहले ही घोषित किए गए, जिससे यह स्पष्ट है कि ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाजी लाइन-अप में वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के मुकाबले काफी बदलाव होगा। सैम कॉन्सटास तीसरा टेस्ट खेलेंगे। उन्होंने भारत के खिलाफ डेब्यू पर एमसीजी में 60 रन की पारी खेली थी। वहीं जोश इंगलिस ने श्रीलंका के खिलाफ गॉल टेस्ट में शतक लगाकर अपने टेस्ट करियर की शानदार शुरूआत की थी।

वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में लाबुशेन को सलामी बल्लेबाज के रूप में आजमाया गया था, लेकिन वे केवल 17 और 22 रन की पारियां ही खेल पाए। पिछले दो वर्षों से उनका टेस्ट फॉर्म लगातार गिरावट पर है।

चयनकताओं के अध्यक्ष जॉर्ज बैली ने कहा, मार्नस जब अपने सर्वश्रेष्ठ पर होते हैं तो टीम के लिए बेहद अहम होते हैं। वह भी समझते हैं कि उनका प्रदर्शन उस स्तर पर नहीं है जिसकी हम और वे खुद उनसे अपेक्षा करते हैं। हम उनके खेल के उन पहलुओं पर काम करना जारी रखेंगे जिन्हें सुधारने की जरूरत है। स्मिथ को साउथ अफ्रीका के खिलाफ लॉर्ड्स टेस्ट के दौरान टेम्बा बावुमा का कैच छोड़ते समय उंगली में गंभीर चोट लगी थी। उनकी छोटी उंगली में कंपाउंड डिसलोकेशन हुआ है और फिलहाल उन्हें आठ हफ्ते के लिए स्प्लिंट पहनना होगा। हालांकि उम्मीद है कि वे वेस्टइंडीज दौरे के बाद के टेस्ट में वापसी कर सकते हैं। टेस्ट की अंतिम एकादश और बल्लेबाजी क्रम की घोषणा मैच के करीब की जाएगी, लेकिन उम्मीद है कि कॉन्सटास, उस्मान ख्वाजा के साथ पारी की शुरूआत करेंगे। पिच की स्थिति के अनुसार ऑस्ट्रेलिया दो फ्रंटलाइन स्पिनर – मैट कुह्नमैन और नाथन लायन – को भी आजमा सकता है।

नौटिंघम में ब्रिटेन की कैटी बोल्टर राउंड 16 मैच में जीत के बाद उत्साहित होती हुई।

# गर्मियों में अचार खराब होने से बचाएं, इन असरदार तरीकों से

**गर्मी के मौसम में अचार जल्दी खराब हो जाता है। ज्यादा गर्मी, नमी और हवा की वजह से अचार में फफूंदी लग सकती है या उसका स्वाद बिगड़ सकता है। लेकिन कुछ आसान तरीकों को अपनाकर आप अपने अचार को गर्मियों में भी लंबे समय तक ताजा और स्वादिष्ट रख सकते हैं। आइए जानते हैं ऐसे 3 खास उपाय, जिनसे आपका अचार खराब होने से बच जाएगा।**

### अचार बनाने में तेल की मात्रा बढ़ाएं

तेल अचार में एक प्राकृतिक प्रिजर्वेटिव की तरह काम करता है। गर्मी में अचार खराब होने से बचाने के लिए अचार में अच्छी मात्रा में तेल डालना जरूरी होता है। कोशिश करें कि अचार पूरी तरह से तेल में डूबा रहे। तेल की एक परत अचार को ऑक्सीजन से बचाती है, जिससे फफूंदी लगने का खतरा कम हो जाता है। सरसों का तेल या मस्टर्ड आइल सबसे बेहतर होता है क्योंकि इसमें नेचुरल एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं।

अचार बनाते समय सही मात्रा में नमक और सिरका डालें अचार खराब होने से बचाने के लिए उसकी रेसिपी का भी ध्यान रखना जरूरी है। नमक अचार को खराब होने से बचाने में मदद करता है। इसलिए अचार में पर्याप्त नमक डालना जरूरी है। बहुत कम नमक डालने से अचार जल्दी खराब हो सकता है। सिरका भी एक नेचुरल प्रिजर्वेटिव होता है, जो अचार को लंबे समय तक सुरक्षित रखता है। अगर आप बिना सिरके का अचार बनाते हैं, तो उसे जल्दी खराब होने का खतरा ज्यादा होता है। ऐसे में सिरका या नींबू का रस जरूर डालें।

### साफ और सूखे बर्तन का इस्तेमाल करें

अचार बनाने और रखने के लिए हमेशा साफ और पूरी तरह से सूखे बर्तन का इस्तेमाल करें। गीले या गंदे बर्तन अचार की क्वालिटी खराब कर सकते हैं। कांच या स्टील के जार सबसे अच्छे होते हैं, क्योंकि ये अचार के स्वाद को प्रभावित नहीं करते।

### अचार को छोटे-छोटे जार में बांटकर रखें

गर्मियों में अचार को लंबे समय तक बचाने का एक अच्छा तरीका है उसे छोटे-छोटे जार या कंटेनर में बाँटना। इससे हर बार बड़े जार को खोलने से बचा जाता है और अचार में हवा कम जाती है। छोटे जार को जल्दी-जल्दी उपयोग में लाया जा सकता है, जिससे अचार जल्दी खराब नहीं होता। हर जार को इस्तेमाल करने के बाद अच्छी तरह से बंद कर दें।

### अचार को रखें ठंडी और सूखी जगह पर

गर्मियों में अचार को ज्यादा गर्म और नम जगह पर रखना नुकसानदायक होता है। इसलिए अचार को हमेशा ऐसी जगह रखें जो ठंडी और सूखी हो। अचार की डिब्बी या बोतल को धूप में न रखें। रसोई में ऐसा कोना चुनें जहाँ सीधी धूप न आती हो। अगर संभव हो तो अचार को फ्रिज में रखें, खासकर अगर वह बिना ज्यादा तेल या सिरका वाला हो। ठंडी जगह पर रखने से अचार की ताजगी बनी रहती है और उसमें फफूंदी लगने का खतरा कम हो जाता है।

## सब्जियां सॉते करते वक्त गल जाती हैं, जानिए फ्राई करने के आसान टिप्स

रोजमर्रा की किचन लाइफ में सब्जियां सॉते (हल्का भूनना) करना आम बात है। लेकिन कई बार होता है कि हम सब्जियां पकाते वक्त उन्हें ज्यादा भून देते हैं या तेज आंच पर पकाते हैं, जिससे वो ज़्यादा गल जाती हैं या उनका टेस्ट और टेक्सचर खराब हो जाता है। अगर आपके साथ भी ऐसा होता है, तो टेंशन लेने की जरूरत नहीं। यहां हम आपको बता रहे हैं कुछ आसान टिप्स और ट्रिक्स जिनकी मदद से आप सब्जियों को सॉते करते वक्त गलने से बचा सकते हैं और उन्हें स्वादिष्ट और क्रिस्पी बना सकते हैं।

सही आंच का करें इस्तेमाल

सब्जियों को फ्राई या सॉते करते समय आंच बहुत मायने रखती है। शुरुआत में तेज आंच पर सब्जियां डालें ताकि वो अंदर से पानी न छोड़ें, फिर बाद में आंच को मीडियम करें। इससे सब्जियां गलेंगी नहीं और उनका स्वाद भी बना रहेगा।

तेल की मात्रा हो सही

तेल ज़्यादा या कम दोनों ही स्थिति में सब्जियों का स्वाद बिगाड़ सकता है। बहुत कम तेल से सब्जियां जल सकती हैं और बहुत ज्यादा तेल से वो नरम और ऑयली हो जाती हैं। इसलिए एक बैलेंस बनाएं — न ज़्यादा, न कम।

ज्यादा देर तक न पकाएं

सॉते का मतलब है हल्का भूनना, ना कि पूरी तरह पकाना। कई लोग सब्जियों को तब तक पकाते रहते हैं जब तक वो बिल्कुल गल न जाएं। ऐसा न करें। सब्जियों को सिर्फ 4-5 मिनट तक ही भूनें, जब तक वो हल्की क्रिस्पी और थोड़ी पक जाएं।

नमक बाद में डालें

अगर आप सब्जियों में शुरुआत में ही नमक डाल देते हैं तो वो जल्दी पानी छोड़ देती हैं और गलने लगती हैं। इसलिए जब सॉते का प्रोसेस लगभग पूरा हो जाए, तब ही नमक डालें।

कटिंग का रखें ध्यान

सब्जियों को बहुत बारीक या बहुत मोटा न काटें। अगर सब्जी बहुत पतली होगी तो जल्दी गल जाएगी, और अगर बहुत मोटी होगी तो ठीक से पक नहीं पाएगी। इसलिए मध्यम आकार में काटना सबसे अच्छा होता है।

ढककर न पकाएं

सॉते करते वक्त सब्जियों को कभी भी ढककर न पकाएं। ढकने से भाप बनती है जिससे सब्जियां नरम और गीली हो जाती हैं। खुला पकाएं ताकि उनमें हल्का क्रंच और रंग बना रहे। अगर आप इन आसान टिप्स को अपनाते हैं तो आपकी सब्जियां न तो ज़्यादा गलेंगी और न ही उनका स्वाद खराब होगा। वो दिखने में भी अच्छी लगेंगी और खाने में भी मजेदार लगेंगी।

# सिर्फ इन दो चीजों से बनाएं पूड़ी को घंटों तक सॉफ्ट और फ्लफी!

पूड़ी हमारे भारतीय त्योहारों और खास अवसरों का अहम हिस्सा होती है। चाहे कोई खुशी का मौका हो या फिर विशेष पूजा, पूड़ी हर जगह अपनी जगह बनाती है। लेकिन, सॉफ्ट, फूली हुई और कुरकुरी पूड़ी बनाने के लिए सही आटा गूंथने की तकनीक और सही सामग्री का होना जरूरी है। यदि आप भी चाहती हैं कि आपकी पूड़ी हर बार सही और नरम बने, तो इन खास टिप्स को अपनाएं जो न सिर्फ आपके खाने के अनुभव को बेहतरीन बनाएंगे, बल्कि पूड़ी को घंटों तक सॉफ्ट भी बनाए रखेंगे।अगर आपसे भी पूड़ी ठीक तरह से नहीं बनती है या फूलती नहीं है, तो ये ट्रिक आजमाएं।

### नरम पूड़ी के लिए जरूरी सामग्री

दही – प्राकृतिक नमी और टेंगी स्वाद के लिए दही पूड़ी बनाने का एक पारंपरिक और प्रभावी तरीका है। दही में मौजूद प्राकृतिक अम्लता और नमी आटे को हाइड्रेट करती है और उसे मुलायम बनाती है। दही का प्रयोग करने से आटे के ग्लूटेन को तोड़ने में मदद मिलती है, जिससे पूड़ी में लचीलापन आता है और उसे बेलना भी आसान हो जाता है। यह पूड़ी में एक हल्का सा खट्टा स्वाद भी डालता है, जो उसे और भी स्वादिष्ट बनाता है। कैसे डालें दही– एक कप आटे में लगभग 2 बड़े चम्मच दही डालें। आटा गूंथते समय इसे मिलाएं और कुछ देर के लिए आटे को ढककर अलग रखें ताकि दही अपना काम कर सके।

सूजी – फूली हुई और हल्की पूड़ी के लिए सूजी (रवा) को आटे में मिला कर आप अपनी पूड़ी को अंदर से मुलायम और बाहर से हल्का कुरकुरे बना सकते हैं। सूजी आटे में अतिरिक्त नमी को सोख लेती है, जिससे पूड़ी को तलने के बाद भी सॉफ्ट रखा जा सकता है। सूजी से बने एयर पॉकेट्स पूड़ी को फूली हुई बनाते हैं और उसकी बनावट को हल्का रखते हैं।

### कैसे डालें सूजी

नरम पूड़ी बनाने के लिए अतिरिक्त टिप्स

आटे को रेस्ट करने दें

पूड़ी के आटे को गूंथने के बाद कम से कम 15-20 मिनट तक ढककर आराम करने दें। इससे आटे में ग्लूटेन सही तरह से काम करता है और पूड़ी का आकार बेहतर होता है।

### गुनगुने पानी का इस्तेमाल करें

आटा गूंथते समय गुनगुने पानी का इस्तेमाल करें, क्योंकि यह आटे को मुलायम बनाता है। ठंडा पानी आटे को सख्त कर सकता है और गर्म पानी आटे को अधिक नमी प्रदान करता है।

### सही तली हुई पूड़ी के लिए सही तेल का तापमान रखें

पूड़ी तलने के लिए तेल का तापमान मीडियम हाई होना चाहिए। बहुत ठंडा तेल पूड़ी को ऑयली बना देता है और बहुत गर्म तेल पूड़ी को जलाकर उसे अंदर से कच्चा छोड़ देता है।

### तलने के बाद अतिरिक्त तेल निकालें

पूड़ी तलने के बाद उसे पेपर टॉवल पर रखें ताकि अतिरिक्त तेल सोख लिया जा सके। फिर एक सूती कपड़े से पूड़ी को ढक लें ताकि वह नमी बनाए रखे और जल्दी सूखने से बच जाए।

### पूड़ी को सॉफ्ट और ताजा रखने के उपाय

यदि आप पूड़ी को यात्रा के लिए बना रही हैं, तो उन्हें इन्सुलेटेड कंटेनर या हॉट बॉक्स में रखें। इससे वे लंबे समय तक गर्म और सॉफ्ट रहती हैं। ध्यान रखें कि बहुत सारी पूड़ियों को एक-दूसरे के ऊपर न रखें, इससे वे गीली हो सकती हैं और ज्यादा तेल सोख सकती हैं।

इन सभी टिप्स को अपनाकर आप अपनी पूड़ी को ना सिर्फ नरम और फूली हुई बना सकती हैं, बल्कि उन्हें घंटों तक ताजगी और सॉफ्टनेस भी बनाए रख सकती हैं। दही और सूजी का सही उपयोग आपकी पूड़ी को एक बेहतरीन टेक्सचर देता है और उसे खाने में और भी स्वादिष्ट बनाता है। तो अगली बार जब भी पूड़ी बनाएं, इन टिप्स को जरूर अपनाएं और हर बाइट को इंजॉय करें।

## जले हुए बर्तन साफ करना हुआ आसान, अपनाएं ये असरदार घरेलू उपाय

रसोई चाहे किसी बड़ी फैमिली की हो या छोटे परिवार की, खाना बनाते समय बर्तनों का जलना एक आम समस्या है। खासकर रसोई में काम करने वाली महिलाएं इस बात से बहुत परेशान रहती हैं क्योंकि जले हुए बर्तन साफ करना एक थकाऊ और मुश्किल काम होता है। अगर आप भी इस परेशानी का सामना कर रही हैं, तो अब चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि हम आपको बताने जा रहे हैं कुछ ऐसे घरेलू नुस्खे, जिनकी मदद से आप जले हुए बर्तन आसानी से और जल्दी साफ कर सकती हैं।

### बेकिंग सोडा और पानी का उपाय

बेकिंग सोडा सिर्फ बेकिंग के लिए ही नहीं, बल्कि सफाई में भी बेहद कारगर होता है।

क्या करें : सबसे पहले जले हुए बर्तन में पानी भरें। फिर उसमें 1 कप बेकिंग सोडा डाल दें। इस मिश्रण को कुछ घंटों तक ऐसे ही छोड़ दें। अब एक मजबूत ब्रश या स्टील वूल की मदद से बर्तन को रगड़ें। जले हुए हिस्से धीरे-धीरे साफ होने लगेंगे। यह उपाय खासकर तब कारगर होता है जब बर्तन का तला ज्यादा जल गया हो।

### सिरका और पानी का गर्म मिश्रण

सिरका (विनेगर) के अंदर मौजूद एसिडिक गुण जले हुए दाग-धब्बों को ढीला करने में मदद करते हैं।

क्या करें : जले हुए बर्तन में बराबर मात्रा में सिरका और पानी डालें। अब इसे मध्यम आंच पर कुछ मिनट तक उबालें। जब पानी ठंडा हो जाए, तो किसी स्क्रबर या ब्रश से बर्तन को रगड़कर धो लें। इससे बर्तन की कालिख और जले हुए निशान आसानी से निकल जाते हैं।

### टमाटर का पेस्ट भी है फायदेमंद

अगर आपके पास सिरका या बेकिंग सोडा नहीं है, तो टमाटर का पेस्ट भी काम आ सकता है।

क्या करें : कुछ टमाटर को पीसकर या बाजार से टमाटर का पेस्ट लेकर, उसे जले हुए हिस्से पर अच्छी तरह लगाएं। इसे 15-20 मिनट तक ऐसे ही छोड़ दें। फिर सामान्य पानी से धो लें। टमाटर में मौजूद हल्के एसिडिक तत्व बर्तन के जले हिस्से को नरम कर देते हैं, जिससे उसे साफ करना आसान हो जाता है।

## बड़े काम की है फ्रिज में पड़ी बासी ब्रेड, घर का सामान चमकाने में आएंगी काम

ब्रेड का इस्तेमाल आजकल सिर्फ विदेशों में ही नहीं, बल्कि भारत के किचन में भी अलग-अलग रेसिपी बनाने के लिए किया जाता है। लेकिन जब ब्रेड एक्सपायर हो जाती है या बासी हो जाती है तो ज्यादातर लोग इसे फेंक देते हैं। यह समझदारी नहीं होती। अगर आप ब्रेड के उपयोग से जुड़ी कुछ खास सफाई और घरेलू नुस्खे जान लें, तो आप बासी ब्रेड को फेंकना बंद कर देंगे। क्योंकि बासी ब्रेड आपके कई काम आसान कर सकती है और पैसों की बचत भी करवा सकती है।

### कपड़ों से तेल का दाग हटाएं

कपड़ों पर अगर तेल का दाग लग जाए तो वह बहुत जिद्दी हो जाता है और उसे निकालना मुश्किल हो जाता है। ऐसे दाग लगते ही आप तुरंत बासी ब्रेड का टुकड़ा लेकर दाग वाली जगह पर दबाएं। बासी ब्रेड तेल को सोख लेगी और दाग हल्का होने लगेगा। इसके बाद आप उस जगह पर बेकिंग सोडा डालकर कपड़े को धो लें, दाग धीरे-धीरे खत्म हो जाएगा।

### पीतल और तांबे के बर्तन चमकाएं

पीतल और तांबे के बर्तन कई बार कालापन और दाग लग जाते हैं, जिन्हें साफ करना मुश्किल होता है। ऐसे में बासी ब्रेड, नमक और नींबू को मिलाकर इसका उपयोग करें। ब्रेड को पीसकर उसमें नमक और नींबू मिलाएं और इस पेस्ट को बर्तनों पर लगाकर रगड़ें। इससे आपके पीतल और तांबे के बर्तन चमकने लगेंगे और उनके दाग भी साफ हो जाएंगे।

### मिरर और कांच की सफाई

अगर आपको घर के खिड़की या दरवाजे के गंदे कांच साफ करने हैं तो बासी ब्रेड का टुकड़ा लेकर कांच पर रगड़ें। कुछ ही मिनटों में कांच पर जमी धूल और दाग आसानी से हट जाएंगे। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ब्रेड में मौजूद स्टार्च गंदगी को साफ करने में मदद करता है।

### क्रियोन और रंग के दाग हटाएं

छोटे बच्चे अक्सर घर की दीवारों पर स्कैच पेन, कलर्स या क्रियोन से दाग लगा देते हैं। इन्हें साफ करने के लिए आप बासी ब्रेड के टुकड़े पर बेकिंग सोडा लगाकर दाग वाली जगह पर रगड़ें। यह नुस्खा आपकी दीवारों को बिल्कुल साफ कर देगा और रंग के दाग आसानी से हट जाएंगे।

### मसालों के डिब्बे में नमी रोकें

कई बार मसालों के डिब्बे में नमी आ जाती है, जिससे मसाले चिपकने लगते हैं और उनका स्वाद खराब हो जाता है। ऐसी समस्या में भी बासी ब्रेड आपकी मदद कर सकती है। मसालों के डिब्बे में एक छोटा सा बासी ब्रेड का टुकड़ा डाल दें। यह नमी को सोख लेगा और मसाले चिपकेंगे नहीं। कुछ घंटों बाद आप ब्रेड को निकाल सकते हैं। इस तरह से बासी ब्रेड फेंकने की बजाय घरेलू कामों में इस्तेमाल कर आप न केवल पैसे बचा सकते हैं बल्कि अपने रोजमर्रा के काम भी आसानी से कर सकते हैं।

# मैं खुद को एक ग्लोबल एंटरटेनर के रूप में स्थापित करना चाहती हूं

**उर्वशी रौतेला बॉलीवुड के साथ-साथ साउथ में भी एक्टिव हैं। उनकी पिछली फिल्म डाकू महाराज इस साल की तीसरी हाइएस्ट ग्रॉसिंग तेलुगु फिल्म है। वहीं वह कान्स में भी अपने स्टाइल से सुर्खियों में रहीं।**

**डाकू महाराज इतनी सफल रही। इस फिल्म के बारे में आप क्या सोचती हैं?**

डाकू महाराज की सफलता से बहुत खुश हूं। यह एक ऐसी फिल्म है, जिसमें एक्शन, इमोशन और एक शानदार कहानी का बेहतरीन मेल है। यह परोपकार, विश्वासघात और पश्चाताप जैसे मजबूत एहसासों से भरी हुई है। इसकी कहानी 1996 के दौर की है। इसमें नंदामुरी बालकृष्ण सर ने ऐसा रोल निभाया है जो गरीबों के लिए लड़ता है।

**इस साल कान्स में आपके स्टाइल ने खूब चर्चा पाई। क्या कहेंगी?**

कान्स फेस्टिवल में मैंने बोल्ड और आर्टिस्टिक लुक अपनाया था लेकिन साथ ही अपनी संस्कृति और जड़ों से भी जुड़ी रही। 2024 में मैंने खालिद और मारवान सेरीन के कलेक्शन से एक शानदार गाउन पहना था, जो रॉयल्टी और इनोवेशन का कॉम्बिनेशन था। इस साल में स्कारलेट पैरोट क्लच लुक में दिखी। अब मैंने ये सीख लिया है कि ग्लोबल ट्रेंड्स को अपनी पर्सनालिटी के साथ कैसे बैलेंस किया जाए। हर लुक सिर्फ फैशन नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, भारतीयता और पहचान की एक कहानी कहता है।

**एक्टिंग के अलावा कोई अन्य क्रिएटिव काम है, जिसे आप एक्सप्लोर करना चाहती हैं?**

एक्टिंग के अलावा मुझे म्यूजिक और फैशन का भी बहुत शौक है। ये दोनों चीजें मेरी क्रिएटिविटी को जाहिर करने के खास तरीके हैं। मैं जल्द ही जेसन डेरुलो के साथ अपने पहले इंटरनेशनल म्यूजिक वीडियो में नजर आऊंगी और इसे लेकर में बेहद उत्साहित हूं। इसके साथ ही, मैं अब प्रोडक्शन में भी कदम रख रही हूं ताकि ऐसी कहानियां बना सकूं जो मेरे दिल के करीब हों। फैशन की बात करें तो मैं अपनी खुद की एक लाइन शुरू करना चाहती हूं जो मेरे स्टाइल को दिखाए। कुछ ऐसा जो भारतीय पारंपरिक कारीगरी को मॉर्डन लुक के साथ कनेक्ट करें।

**आने वाले वर्षों के लिए आपके करियर के टारगेट क्या हैं?**

मैं खुद को एक ग्लोबल एंटरटेनर के रूप में स्थापित करना चाहती हूं, जो अलग-अलग मंचों पर देश का प्रतिनिधित्व करे। मेरा सपना है कि मैं उन कहानियों का हिस्सा बनूं जो न सिर्फ मनोरंजन करें, बल्कि समाज को कुछ सोचने पर भी मजबूर करें। बुमन सेंट्रिक कहानियां मुझे खास तौर घर आकर्षित करती हैं, क्योंकि ये नारी शक्ति और आत्मनिर्भरता की झलक देती हैं। भविष्य में में ऐसी कहानियों करना ही नहीं, बल्कि निर्देशन में भी हाथ आजमाना चाहती है। चाहे वह कान्स के रेड कार्पेट पर चलना हो या ऐसे रोल निभाना हो जो अब तक किसी ने न किया हो, मैं हर चुनौती को एक नए मौके की तरह लेना चाहती हूं और अपनी लिमिट्स को क्रॉस करते रहना चाहती हूं।

## साउथ एक्ट्रेस मालविका ने मुंबई को बताया असुरक्षित

साउथ एक्ट्रेस मालविका मोहनन ने कुछ समय पहले ही मुंबई में महिला सुरक्षा पर बात की थी। उन्होंने कहा था कि कॉलेज के दिनों में वो लोकल से सफर करती थीं, तब सुरक्षा महज किस्मत की बात हुआ करती थी। मालविका का बयान सामने आने के बाद मुंबई पुलिस ने इस खेद व्यक्त करते हुए पर प्रतिक्रिया दी है। मालविका ने कुछ समय पहले ही हॉटरफ्लाई को दिए इंटरव्यू में कहा था, आज मेरे पास कार और ड्राइवर है, ऐसे में अगर कोई मुझसे पूछे कि क्या मुंबई सेफ है, तो मैं शायद हां कहूं, लेकिन जब मैं कॉलेज में थी, तब मेरा मानना बिल्कुल अलग था। मैं लोकल ट्रेन और पब्लिक बस में सफर करती थी। उस समय मुझे ये सुरक्षित नहीं लगता था। ये बस किस्मत की बात हुआ करती थी। आपको बस उम्मीद करनी पड़ती थी कि आपका सफर बिना किसी घटना के कट जाए।

मालविका का बयान आने के बाद मुंबई पुलिस ने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट से इसका जवाब दिया है। पोस्ट में लिखा गया है, मिस मालविका, हमारे सामने वो ऑनलाइन पोर्टल आया है, जहां आपने अपना अनुभव शेयर कर, शहर में महिला सुरक्षा पर चिंता जाहिर की। हम सोच सकते हैं कि इस तरह के एक्सपीरियंस चौंकाने वाले होते हैं और लंबा असर छोड़ते हैं। इसलिए हमें ये दोहराना चाहिए कि दिन का कोई भी समय हो या शहर में कोई भी जगह हो, प्लीज 112/100 पर हमसे संपर्क करें और हम जल्द से जल्द सहायता देंगे। रिपोर्ट न करने से अपराधी का हौसला बढ़ता है। आगे लिखा है, मुंबई शहर हमेशा से महिलाओं के लिए सुरक्षित रहा है और हम इसे बेहतर बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। रिपोर्ट किए जाने के बाद अपराधी से उचित और कानूनी तरीके से निपटा जाएगा। कृपया इस बात को लोगों तक पहुंचाने के लिए अपनी अच्छी छवि का उपयोग करें। ये इस तरह के मामलों को हल करने में मदद कर सकता है, जो असामान्य हैं और जिन्हें सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है। बताते चलें कि मालविका मोहनन साउथ सिनेमा की मशहूर एक्ट्रेस हैं। वो मास्टर, युद्रा जैसी बेहतरीन फिल्मों का हिस्सा रही हैं। जल्द ही वो प्रभास के साथ फिल्म द राजा साहब में नजर आएंगी।

## शिफ्ट टाइम पर बोलीं जेनेलिया, कहा- मुश्किल है, असंभव नहीं

अभिनेत्री दीपिका पादुकोण ने जब से फिल्म स्पिरिट छोड़ी है, इंडस्ट्री में शिफ्ट टाइमिंग और वर्क-लाइफ बैलेंस को लेकर चर्चा छिड़ गई है। दरअसल, दीपिका ने निर्देशक संदीप रेड्डी वांगा से आठ घंटे की शिफ्ट करने की शर्त रखी थी। इस पर सहमति नहीं बनने पर दीपिका ने फिल्म छोड़ दी। इसके बाद कई सितारे दीपिका के बचाव में आ चुके हैं। वहीं, हाल ही में अभिनेत्री जेनेलिया डिसूजा से जब वर्क-लाइफ बैलेंस से जुड़ा सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि वे हर दिन 10 घंटे काम करती हैं। जेनेलिया डिसूजा फिल्म सितारे जमीन पर फिल्म में नजर आएंगी, जो इसी महीने रिलीज होगी। हाल ही में बातचीत में जेनेलिया डिसूजा ने बताया कि वे अपनी निजी जिंदगी को कैसे मैनेज करती हैं? अभिनेत्री ने कहा कि डायरेक्टर जब काम के घंटे बढ़ा देते हैं तो वे एडजस्टमेंट कर लेती हैं। जेनेलिया ने कहा, यह मुश्किल है लेकिन असंभव नहीं है। मैं दिन में 10 घंटे काम करती हूं और ऐसे दिन भी आते हैं जब डायरेक्टर इसे बढ़ाकर 11 या 12 घंटे करने के लिए कहते हैं।

जेनेलिया डिसूजा ने आगे कहा, मुझे लगता है कि यह ठीक है, लेकिन हमें उन एडजस्टमेंट को करने के लिए समय चाहिए। जब आपके पास एक या दो दिन होते हैं, जब आपको ज्यादा काम करना पड़ता है। यह एक आपसी समझ और प्रोसेस भी है, जिसकी जरूरत है।

## बेपरवाई के जरिए लोगों को मेरा मैसेज, दुनिया के लिए खुद को मत बदलो

प्लेबैक सिंगर जोनिता गांधी ने अपना नया गाना बेपरवाई रिलीज किया है। उन्होंने आईएएनएस से बात करते हुए इस गाने के बारे में विस्तार से बताया। सिंगर ने बताया कि यह गाना उस एहसास को दिखाता है जब इंसान बेफिक्र हो जाता है, उसे इसकी परवाह बिल्कुल भी नहीं होती कि दुनिया उसके बारे में क्या सोचती है। जोनिता गांधी ने आईएएनएस से बात करते हुए बताया कि उनका गाना बेपरवाई कैसे बना। उन्होंने कहा, इस गाने का विचार टोरंटो में एक म्यूजिक सेशन के दौरान आया था। उस दिन मेरा मूड कुछ ऐसा था, मैं दुनिया को लेकर थोड़ी निराशा और चिढ़ सी महसूस कर रही थी। मुझे लग रहा था कि हम कई बार दूसरों की राय में उलझ जाते हैं, और खुद को भूल जाते हैं। फिर मेरे मन में ख्याल आया कि अब और नहीं, अब बेफिक्र होकर जीना है, बिना इस डर के कि लोग क्या कहेंगे। इसी सोच से गाने का कोरस बना, जो कहता है, अब मैं बस बेपरवाह हूं, मैं यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि यह गाना मेरी पहचान से जुड़ा हो, ताकि सुनने वालों को लगे कि हां, ये एक जोनिता गांधी का गाना है।

जोनिता गांधी ने आगे कहा, इस गाने को मैंने अपने अंदाज में गाया और पेश किया है। इसमें मैंने अपनी पहचान और गाने की खास स्टाइल को बनाए रखा, ताकि यह गाना भी बाकी उनके गानों की तरह ही लगे। गाने में भी मैंने सॉफ्ट टोन का इस्तेमाल किया, जैसे मैं हर गाने में करती हूं। इस गाने को बनाने में मेरे साथ म्यूजिक प्रोड्यूसर एरिजा ने काम किया। मैंने पहले भी उनके साथ कई बार काम किया है। उन्होंने गाने के म्यूजिक को इस तरह तैयार किया, जो हर एक शब्द के फील को बढ़ाता है।

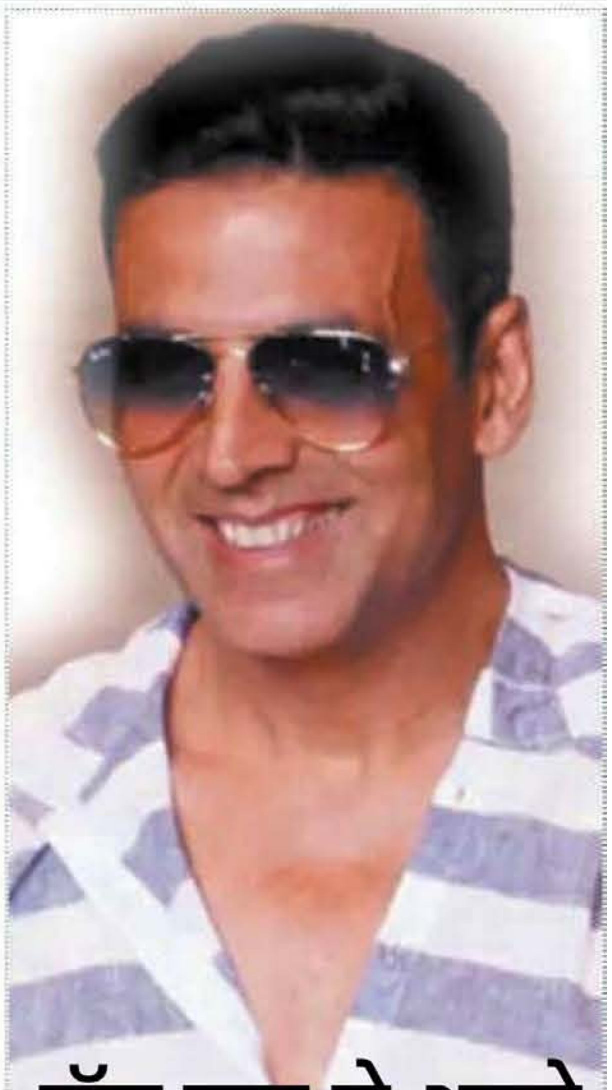

## टॉम क्रूज से अपने प्लेन स्टंट की तुलना पर बोले अक्षय

बॉलीवुड में 'खिलाड़ी' और एक्शन किंग के नाम से जाने जाने वाले अभिनेता अक्षय कुमार इन दिनों सोशल मीडिया पर चर्चाओं में हैं। हाल ही में खिलाड़ी कुमार की फिल्म हाउसफुल 5 रिलीज हुई है और अब उनकी एक और फिल्म 'कनप्पा' इन दिनों रिलीज से पहले चर्चाओं में है। इसी बीच अक्षय की एक फिल्म के सीन की तुलना हॉलीवुड एक्टर टॉम क्रूज से हो रही है, जिसपर अब उनका रिएक्शन आ गया है। अक्षय ने इस पर कटाक्ष भरे अंदाज में इसका जवाब दिया है।

### अक्षय ने टॉम से तुलना पर दिया जवाब

हाल ही में एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें अक्षय कुमार के 2000 में रिलीज हुई फिल्म 'खिलाड़ी 420' का एक विमान पर स्टंट दिखाया गया है, वहीं एक क्लिप में टॉम क्रूज का 'मिशन- इंपॉसिबल' फिल्म से विमान पर स्टंट दिखाया गया है। इस तुलना पर अक्षय ने अपना रिएक्शन दिया है जो फैंस के लिए मजेदार और चौंकाने वाला है।

अक्षय कुमार ने बताया कि उनके एक्शन स्टंट्स की प्रेरणा टॉम क्रूज से नहीं बल्कि बचपन के पसंदीदा कार्टून 'टॉम और जेरी' से मिलती है। उन्होंने कहा, 'मैं जहां से प्रेरणा लेता हूं, वो आप विश्वास नहीं करेंगे टॉम और जेरी से। मुझे ये कार्टून बहुत पसंद है। ये बच्चों के लिए है लेकिन इसमें बहुत जोरदार और हिंसक एक्शन होता है। मुझे याद है टॉम हेलीकॉप्टर से झूलते हुए जेरी को पकड़ता है, जिसे मैंने 'सबसे बड़ा खिलाड़ी' में अपनाया और 'खिलाड़ी 420' में वो विमान पर टॉम का स्टंट मैंने इसी से लिया।'

### 'टॉम एंड जेरी' का अक्षय ने किया जिक्र

अक्षय ने कार्टून 'टॉम एंड जेरी' की हिंसक प्रकृति पर भी रोशनी डाली। उन्होंने हंसते हुए कहा, 'ये कार्टून बहुत हिंसक है। बच्चों को ये फिल्म दिखाना थोड़ा अजीब है क्योंकि इसमें बहुत सारा हिंसक कंटेंट है।' अक्षय कुमार ने अपनी बात को मजाकिया अंदाज में कहा।

### अक्षय कुमार का वर्कफ्रंट

फिल्मों की बात करें तो अक्षय कुमार का साल 2025 शानदार रहा है। इस साल उनके तीन बड़े प्रोजेक्ट्स 'स्काई फोर्स,' 'केसरी चैप्टर 2,' और 'हाउसफुल 5' रिलीज हो चुके हैं। इसके बाद उन्हें तेलुगु फिल्म 'कन्नप्पा' में भगवान शिव की भूमिका में देखा जाएगा। इसके अलावा अक्षय जल्द ही 'जॉली एलएलबी 3' में नजर आएंगे, जिसमें उनके साथ अर्शद वारसी भी हैं। साथ ही, प्रियदर्शन की 'हेरा फेरी 3' में अक्षय अपने प्रिय किरदार राजू की भूमिका दोबारा निभाएंगे, जिससे फैंस के बीच उत्साह का माहौल है।

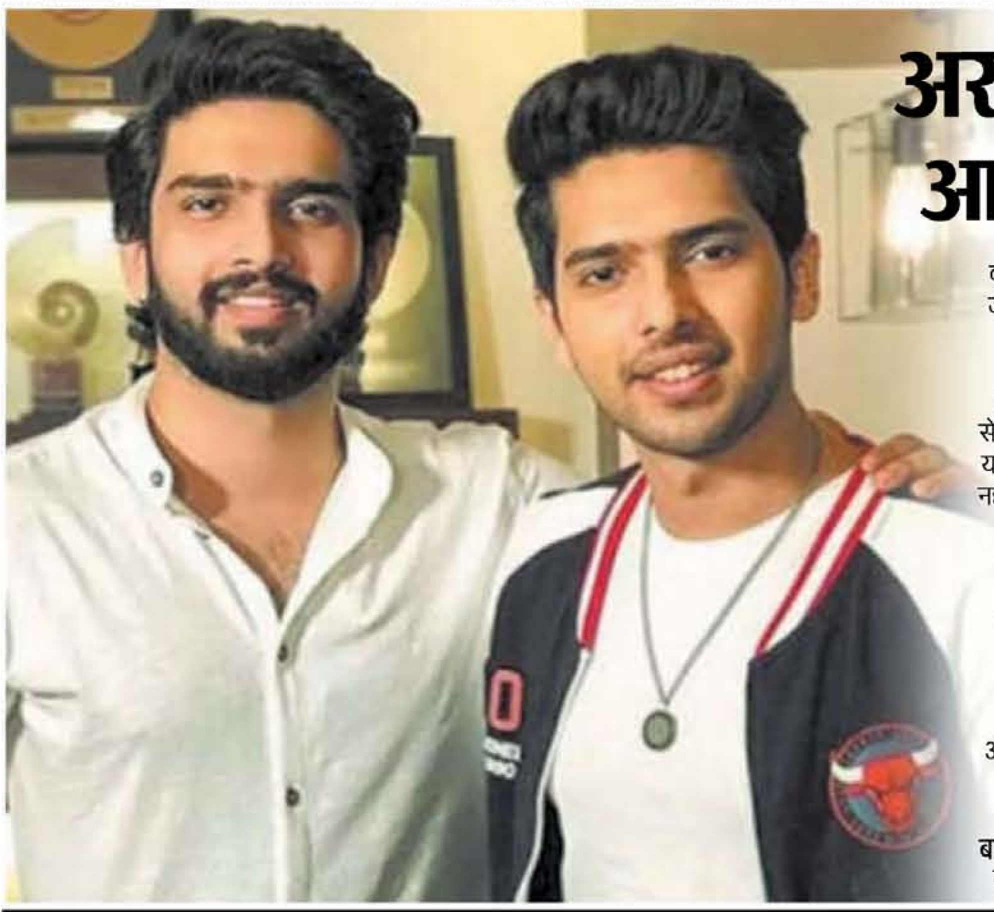

## अरमान -अमाल मलिक के रिश्तों में आई दूरी मिटी, अब फिर साथ गूंजे सुर

कुछ महीने पहले तक मलिक परिवार से जुड़ी मतभेद की खबरों ने सबको चौंका दिया था। म्यूजिक डायरेक्टर अमाल मलिक ने सोशल मीडिया पर अपने माता-पिता और भाई अरमान मलिक से दूर होने की बात कही थी। कई लोग यही सोचने लगे कि अब शायद ये साथ नहीं दिखेंगे। लेकिन अब वही दोनों भाई एक साथ लौट आए हैं। हाल ही में अरमान मलिक ने अपने भाई अमाल के साथ मिलकर एक सिंगल 'बारी बारी' रिलीज किया है। गाना गाया है अरमान ने वहीं इसे कंपोज किया है अमाल ने। अमर उजाला डिजिटल से बातचीत के दौरान अरमान ने इस गाने और भाई के साथ अपने रिश्ते को लेकर बात की।

**अमाल के सोशल मीडिया पोस्ट के बाद अब जब आप दोनों साथ आए हैं, तो कैसा रहा ये सफर? क्या ये दूरी आपको और करीब ले आई?**

हां, ये सफर काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा, लेकिन मैं कह सकता हूं कि हम दोनों अब पहले से भी ज्यादा क्लोज हो गए हैं। उस पूरे फेज के दौरान बहुत सारी बातें हुईं, जो शायद पहले कभी नहीं हुई थीं।हमने दिल से एक-दूसरे को समझा, जो भी मिसअंडरस्टैंडिंग्स थीं उन्हें क्लियर किया। हमारी बॉन्डिंग अब और सॉलिड हो गई है। मैं कह सकता हूं कि इससे पहले इतना गहरा रिश्ता नहीं था।

**क्या आपको कभी लगा कि म्यूजिक तो बस एक जरिया है, असली रिश्ता उससे कहीं गहरा है?**

बिलकुल! म्यूजिक हमें जोड़ता है, लेकिन हमारा रिश्ता उससे कहीं गहरा है। बचपन से एक-दूसरे के सुरों में पले-बढ़े हैं। मम्मी-पापा ने ऐसा माहौल बनाया जहां दिल की बात खुलकर हो सके। अमाल सिर्फ भाई नहीं हैज वो मेरे लिए एक गुरु जैसा है। जब भी मुझे किसी चीज पर राय चाहिए होती है, सबसे पहले उसी के पास जाता हूं। और ये बात मैं सच में बहुत रिस्पेक्ट करता हूं। क्योंकि हर किसी को ऐसा रिश्ता नहीं मिलता।

**अमाल के साथ फिर से काम करना... ये सफर कैसा रहा आप दोनों भाइयों के लिए?**

ये गाना हमने लगभग एक साल पहले बनाया था, जून के महीने में। इसकी जर्नी काफी उतार-चढ़ाव भरी रही। कई बार लगा कि अब इसे रिलीज करते हैं, फिर कभी नहीं कर पाए। फाइनली हमें एक सही विंडो मिली। मैंने सोचा इसे एक स्पेशल मौके पर निकालना चाहिए। अमाल का बर्थडे 16 जून को होता है और हमने 18 जून को इसे रिलीज किया। बहुत वक्त बाद हमारा कोई सिंगल आ रहा है। मैं बहुत खुश हूं क्योंकि इस गाने का वाइब बहुत अलग है... बहुत फन है, कैजुअल है। हमारे बाकी गाने ज्यादातर रोमांटिक और इमोशनल रहे हैं, लेकिन 'बारी बारी' एकदम मस्तीभरा है।

**एक ऐसा लम्हा जो हमेशा याद रहेगा इस गाने से जुड़ा?**

शायद पहली बार ऐसा हुआ कि जिस रफ वॉइस टेक को सिर्फ डेमो के लिए गाया था, वही फाइनल में रखा गया। स्पीकर ऑन था, एक ही टेक में गा दियाज और जो फील उस वक्त थी, वो दोबारा नहीं आ सकी। जितनी बार ट्राय किया, वो इमोशन वापस नहीं आया। इसलिए सोचा - यही टेक रख देते हैं।

**भाई होने के नाते अमाल का आपकी लाइफ में क्या रोल रहा है?**

अमाल मेरे लिए सिर्फ़ एक भाई नहीं, एक गाइड, एक दोस्त, एक सपोर्ट सिस्टम है। हम दोनों का रिश्ता ऐसा है कि अगर वो कुछ शुरू करता है, तो मैं उसे पूरा करता हूं ज्और उल्टा भी। हम एक-दूसरे को कॉम्प्लीमेंट करते हैं। मैं हमेशा कहता हूं - चाहे कुछ भी हो जाए, भाई ही है जो आपको वापस खींच लाता है। आज हम साथ हैं, मजबूत हैं, और आगे भी ऐसे गाने बनाएंगे जो सिर्फ हिट नहीं, दिल से निकले हुए हों।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कर कमलों से जनपद आजमगढ़ में 91.352 किमी. लम्बे 'गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे' का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। 7,283 करोड़ रूपये की लागत से तैयार इस एक्सप्रेसवे से 4 जनपदों-गोरखपुर, संतकबीरनगर, अम्बेडकरनगर, आजमगढ़ की सीधी कनेक्टिविटी मिलेगी। साथ ही, गोरखपुर से लखनऊ 283 किमी. का सफर अब सिर्फ 3 घंटे में पूरा किया जा सकेगा।

# कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कुंवर नूर मोहम्मद का जन्मदिन मनाया

**नोएडा (चेतना मंच)।** काँग्रेस पार्टी केवयोवृद्ध नेता तथा गाँधी वादी टोपी से जाने वाले कुंवर नूर मोहम्मद एव अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय सचिव व हिमाचल के सहप्रभारी विदित चौधरी का जन्मदिन काँग्रेस पदाधिकारियों ने केक काटकर पगडी पहनाकर बडी धूमधाम से मनाया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय सचिव अल्पसंख्यक विभाग लियायत चौधरी, नोएडा के कोडिनेटर सुभाष गाँधी, वरिष्ठ नेता व कोडिनेटर सतेंद्र शर्मा, कोडिनेटर राजकुमार पंडित, प्रदेश सदस्य यतेद्र शर्मा, वरिष्ठ नेता दयाशंकर पाण्डेय, नेता राहुल पांडेय, पीसीसी सदस्य चांद खान, वरिष्ठ नेता अशोक शर्मा, पंडित मुकेश शर्मा, सतपाल गर्ग सहित सैकडों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

# बोर्ड बैठक में रखेंगे मीडिया क्लब के स्थाई आवंटन का प्रस्ताव : सीईओ

**नोएडा (चेतना मंच)।** नोएडा प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉ. लोकेश एम ने नोएडा मीडिया क्लब के पदाधिकारियों को आश्वासन दिया कि शीघ्र ही सभी सदस्य, पत्रकारों के पार्किंग पास बना दिए जाएंगे। उन्होंने ट्रैफिक सेल के प्रभारी व महाप्रबंधक एसपी सिंह के पास इस मांग को स्वीकृति देने के लिए भेज दिया है।

## शीघ्र बनाए जाएंगे पत्रकारों के पार्किंग पास

आज नोएडा मीडिया क्लब के अध्यक्ष आलोक द्विवेदी, महासचिव जयप्रकाश सिंह, उपाध्यक्ष अमित चौधरी, कोषाध्यक्ष मनोज वत्स, सचिव जगदीश शर्मा ने नोएडा प्राधिकरण के सीईओ डॉ. लोकेश से भेंट की तथा उन्हें पत्रकारों के पार्किंग के पास समेत कई मांगों का एक ज्ञापन सौंपा। सीईओ ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि पत्रकारों की पार्किंग पास बना दिए जाएंगे ।

वहीं नोएडा मीडिया क्लब के अस्थाई आंवटन के भी प्रयास किए जाएंगे तथा आगामी बोर्ड बैठक में इस प्रस्ताव को रखा जाएगा।

# ईएसआई हॉस्पिटल व जनऔषधि केन्द्र से उठाए दवाओं के नमूने

**नोएडा (चेतना मंच)।** आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन एवं डीएम मनीष कुमार वर्मा के निर्देशों पर जनपद के मेडिकल स्टोर्स पर मानकों के अनुरूप दवाईयों की बिक्री सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से औषधि निरीक्षक जय सिंह ने ईएसआई हॉस्पिटल नोएडा, आरके मेडिकोज सेक्टर-22 नोएडा एवं प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र नोएडा का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि ईएसआई हॉस्पिटल सेक्टर-24 नोएडा से निरीक्षण के दौरान 5 दवाओं, आरके मेडिकोज सेक्टर 22 नोएडा से 02 दवाओं तथा प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र सेक्टर 22 नोएडा से 2 दवाओं कुल 9 विभिन्न दवाओं के नमूने जांच के लिए एकत्र किये हैं। प्रयोगशाला से रिपोर्ट आने के उपरांत अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

औषधि निरीक्षक द्वारा बताया गया कि आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन के निर्देशों के क्रम में जनपद में सभी प्रकार की दवाइयां मानकों एवं गुणवत्ता के साथ सभी मेडिकल स्टोर्स पर बिक्री सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से आगे भी इसी प्रकार अभियान संचालित करते हुए मेडिकल स्टोर्स पर दवाओं की जांच की जाएगी।


**SAHARA BUILDER & PROPERTIES™**

ISO 9001:2008

**PROPERTIES AVAILABLEFORSALE IN GREATER NOIDA**

RESIDENTIAL

| S.No | Plot Size | House No./Block | Price | Other Details |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 300 Sq.mtr | C-291, Sigma - 02 | 92 Lakh | Completion, S/W |
| 2 | 200 Sq.mtr | G-660, Alpha - 02 | 1.25 Cr. | Completion,N/E & 18 MTR Road |
| 3 | 60 Sq.mtr | G-439, Gamma - 02 | 52 Lakh | Single Story, Corner(18X12),N/E |
| 4 | 1265 Sq.ft | Silver City - 02, PI-1 | 55 Lakh | 2+1 BHK Apartment |
| 5 | 29.76 Sq.ft | 3TF/Block-60, Sector - 10 | 9 Lakh | 1 BHK, Top Floor |
| 6 | 2450 Sq.ft | Royal Apartment(Duplex), Sigma - 04 | On Request | 4BHK, Low rise, Lift |
| 7 | 237 Sq.mtr | C-363, Sector - 03(EXTN) | 1.40 Cr. | 50% Completion, Corner, N/ W |
| 8 | 110 Sq.mtr | 5% Plot, CHI PHI EXTN | 23000/Sq.Mtr. | Corner Plot |
| 9 | 131 Sq.mtr | 5% Plot, CHI PHI EXTN | 23000/Sq.Mtr. | Corner Plot |
| 10 | 930 Sq.mtr | 5% Plot, CHI PHI EXTN | 14000/Sq.Mtr. | Corner Plot |

COMMERCIAL

| S.No | Shop Size | Complex Address | Price | Other Details |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 29.5 Sq.mtr | Block - C, Alpha - 01 | 95 Lakh | G.Floor, Corner, N/E |
| 2 | 463 Sq.ft | NQI Plaza, Alpha - 01 | 95 Lakh | G.Floor, N/E |
| 3 | 19.5 Sq.mtr | Kadamba Shopping Complex, Gamma -01 | 40 Lakh | G.Floor, N/W |
| 4 | 8.15 Sq.mtr | Kiosk, P-3 | 22 Lakh | 24 Mtr Road, N/W |

CONTACT US :+919810441077, +919710441077

Add- Office No. 205, Sunrise Tower,Alpha 1 Commercial Belt, Gr.Noida, G.B.Nagar, U.P-2010308


# चिटेहरा में अतिक्रमण पर चला ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण का बुल्डोजर

**ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)।** ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने ग्राम चिटेहरा में अधिसूचित एरिया पर अतिक्रमण के खिलाफ शुक्रवार को बुल्डोजर चलाया। प्राधिकरण ने करीब 50 हजार वर्ग मीटर जमीन को अतिक्रमण मुक्त करा लिया है, जिसकी कीमत करीब 100 करोड़ रुपये आंकी जा रही है। बताया जा रहा है कि कालोनाइजर इस जमीन पर अवैध निर्माण कर वेयर हाउस बनाने की कोशिश रहे थे।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार ने अधिसूचित एरिया में अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। प्राधिकरण की टीम अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ लगातार कार्रवाई कर रही है।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की टीम शुक्रवार को चिटेहरा गांव में कार्रवाई की। प्राधिकरण के एसीईओ सुमित यादव ने बताया कि कालोनाइजर ग्रेटर नोएडा के अधिसूचित एरिया ग्राम चिटेहरा के खसरा संख्या-169, 170, 171 व 172 की करीब 50 हजार वर्ग मीटर जमीन पर बिना प्राधिकरण की अनुमति निर्माण कर अवैध कालोनी काटने की कोशिश कर रहे थे। बिना नक्शा पास कराए अवैध निर्माण पर रोक लगाने के लिए प्राधिकरण की तरफ से नोटिस भी जारी की गई, लेकिन कालोनाइजर चोरी-छिपे अवैध कालोनी काटने की कोशिश

कर रहे थे। शुक्रवार को महाप्रबंधक परियोजना एके सिंह, विशेष कार्याधिकारी जितेंद्र गौतम, ओएसडी राम नयन सिंह, वर्क सर्किल तीन के प्रभारी राजेश कुमार निम और वर्क सर्किल 1 के प्रभरी प्रभात शंकर सहित वर्क सर्किल 1, 2, 3 व 4 का समस्त स्टाफ ने मिलकर ध्वस्तीकरण की कार्रवाई की। प्राधिकरण की टीम ने 06 जेसीबी और 5 डंपर की मदद से तीन घंटे में कार्रवाई संपन्न की। मुक्त कराई गई जमीन की कीमत 100 करोड़ रुपये से आंकी गई थी।

## 100 करोड़ रूपये कीमत की जमीन पर किया था अवैध कब्जा

एसीईओ सुमित यादव ने अतिक्रमण करने वाले को चेतावनी दी है कि ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के अधिसूचित एरिया में बिना अनुमति या बिना नक्शा पास कराए अवैध निर्माण कर ने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

एसीईओ ने जनमानस से अपील की है कि ग्रेटर नोएडा में कहीं भी जमीन खरीदने से पहले प्राधिकरण से संपर्क कर पूरी जानकारी जरूर प्राप्त कर लें। अवैध कॉलोनी में अपनी गाड़ी कमाई न फंसाएं।

# अवैध खनन के खिलाफ सख्त कदम उठाने के डीएम ने दिए निर्देश

## ग्राम वाजिदपुर के संजय सिंह चौहान को घोषित किया भू-माफिया

**ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)।** जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने जनपद में अवैध खनन के

विरूद्ध कठोर कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं। डीएम ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि जनपद में भू-माफियाओं पर कड़ाई से नकेल कसी जाए। साथ ही उन्होंने वाजिदपुर के संजय सिंह चौहान को भू-माफिया भी घोषित कर दिया है।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट के सभागार में जनपद स्तरीय कर-करोत्तर, एंटी भू-माफिया, आईजीआरएस एवं मासिक स्टाफ की महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में स्टांप एवं निबंधन, वाणिज्य कर, आबकारी, विद्युत, सिंचाई, परिवहन, खनन समेत सभी राजस्व संबंधी विभागों की कार्ययोजना की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि शासन द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए प्रत्येक विभाग ठोस योजना बनाए और प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करे। जिलाधिकारी ने कहा कि ऐसे सभी बड़े बकायेदारों की पहचान कर विशेष अभियान चलाया जाए, जिनसे अधिक राशि की वसूली की जा सकती है।

खनन विभाग की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने अवैध खनन के विरुद्ध कठोर कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिला खनन अधिकारी, उप जिलाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर विशेष अभियान चलाएं और अवैध खनन में संलिप्त लोगों के विरुद्ध प्रभावी एनफोर्समेंट करें। बैठक में नोएडा प्राधिकरण के अधिसूचित क्षेत्र में अवैध रूप से प्राधिकरण की भूमि को खुर्द बुर्द करने एवं सुनियोजित विकास को प्रभावित करने के उद्देश्य से भूमि क्रय विक्रय करने तथा जनता को भ्रामक जानकारी देने, नोएडा महायोजना 2031 के अनुसार नियोजित भूमि की प्रकृति के स्टेटस को परिवर्तित करने एवं स्थापना सुविधाओं के विकास को क्षतिग्रस्त करने के कारण संजय सिंह चौहान पुत्र लिखी सिंह चौहान निवासी ग्राम वाजिदपुर को भू-माफिया घोषित किया।

मुख्यमंत्री जनसुनवाई पोर्टल पर प्राप्त संदर्भों की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि प्रत्येक मामले का निस्तारण समयबद्धता के साथ इस प्रकार किया जाए।

रेरा और श्रम विभाग के लंबित देयों के संबंध में जिलाधिकारी ने कहा कि ऐसे सभी प्रकरणों की आरसी की वसूली सुनिश्चित करने के लिए विशेष अभियान चलाया जाए। उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि वसूली की कार्रवाई की जानकारी शिकायतकर्ता को भी समय-समय पर उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने 05 वर्ष से अधिक समय से लंबित मामलों की समीक्षा करते हुए शीघ्रता से निस्तारित करने के भी निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि वे प्रतिदिन फैमिली आईडी की समीक्षा करें और जनसामान्य को अधिकाधिक योजनाओं से जोड़ने के उद्देश्य से पात्र परिवारों की पहचान कर उनके फैमिली आईडी कार्ड जनरेट कराएं।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी विद्यनाथ शुक्ल, अपर जिलाधिकारी प्रशासन मंगलेश दुबे, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ नरेंद्र कुमार, डिप्टी कलेक्टर वेद प्रकाश पांडेय, उप जिलाधिकारी जेवर अभय सिंह, उप जिलाधिकारी दादरी अनुज नेहरा, उप जिलाधिकारी सदर चारुल यादव सहित विभिन्न विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

**अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर नोएडा सेक्टर-19 के ग्रीन बेल्ट पार्क में योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आचार्य महामंडेलेश्वर साध्वी कृष्णा शर्मा ( संस्थापिका कृषतारा दिव्य लौ ट्रस्ट ( रजि ) सदस्य के नेतृत्व में योग किया गया। इस अवसर पर सनम, देवेश शर्मा, शिवम चौरसिया, कन्हैया, आकाश, रवि वर्मा लक्ष्मी, रजनी,अंश, नीतू मिश्रा, अंजलि, पूजा आयुषी,किंजल श्रीवास्तव आदि बच्चों ने योग करके स्वस्थ रहो मस्त रहो, निरोगी रहो का सन्देश दिया।**

**योग दिवस के उपलक्ष में आज आर डब्लू ए रजत विहार सी ब्लॉक सेक्टर-62 अध्यक्ष अमित नागपाल, महासचिव गोपाल शर्मा तथा समस्त आरडब्लूए टीम के तत्वाधान में झंडा पार्क में योग की क्रियाओं का कार्यक्रम का आयोजन किया गया।**